दक्ष®

12 दिसम्बर 2024 को जारी विज्ञप्ति एवं 16 दिसम्बर 2024 को जारी New Changed Syllabus के अनुसार Best Study Material

A Complete Guide for

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित

REET

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

2025

Level-1 (कक्षा 1 से 5)

NCERT एवं Raj. Board की पुस्तकों पर आधारित

- वर्ष 2022, 2021, 2017, 2015, 2012 व 2011 के **Exam Papers** के प्रश्नों का उत्तर सहित समावेश
- पाठ्यक्रम में शामिल प्रत्येक बिन्दु पर आधारित प्रश्नों का महत्त्व के अनुसार समावेश
- विगत वर्षों के प्रश्नपत्रों में पूछे गये प्रश्नों का अध्यायवार समावेश

— ओमप्रकाश यादव —

Buy Online at :
WWW.DAKSHBOOKS.COM

Daksh Books

16 दिसम्बर, 2024 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रम

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (REET)-2024

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

पाठ्यक्रम (Syllabus)

खण्ड का शीर्षक - बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

लेवल-I

(उस व्यक्ति के लिए जो कक्षा 1 से 5 तक का शिक्षक बनना चाहता है)
(इस प्रश्न-पत्र के इस भाग में 30 अंकों के कुल 30 प्रश्न होंगे)

- **बाल विकास :** वृद्धि एवं विकास की संकल्पना, विकास के विभिन्न आयाम एवं सिद्धान्त, विकास को प्रभावित करने वाले कारक (विशेष रूप से परिवार एवं विद्यालय के संदर्भ में) एवं अधिगम से उनका सम्बन्ध।
  - वंशानुक्रम एवं वातावरण की भूमिका।
- **व्यक्तिगत विभिन्नताएँ :** अर्थ, प्रकार एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारक।
  - **व्यक्तित्व :** संकल्पना, प्रकार व व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक। व्यक्तित्व का मापन।
  - **बुद्धि :** संकल्पना, सिद्धान्त एवं इसका मापन, बहुबुद्धि सिद्धान्त एवं इसके निहितार्थ।
- **विविध अधिगमकर्ताओं की समझ :** पिछड़े, विमंदित, प्रतिभाशाली, सृजनशील, अलाभान्वित-वंचित, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे एवं अधिगम अक्षमता युक्त बच्चे।
  - अधिगम में आने वाली कठिनाइयाँ।
  - समायोजन की संकल्पना एवं तरीके, समायोजन में अध्यापक की भूमिका।
- अधिगम का अर्थ एवं संकल्पना। अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक।
  - अधिगम के सिद्धान्त एवं इनके निहितार्थ।
  - बच्चे सीखते कैसे हैं? अधिगम की प्रक्रियाएँ। चिंतन, कल्पना एवं तर्क
  - अभिप्रेरणा एवं इसके अधिगम के लिए निहितार्थ।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रियाएँ, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005 के संदर्भ में शिक्षण अधिगम की व्यूह रचना एवं विधियाँ।
  - आकलन, मापन एवं मूल्यांकन का अर्थ एवं उद्देश्य, समग्र एवं सतत् मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण। सीखने के प्रतिफल।
  - क्रियात्मक अनुसंधान।
  - शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 अध्यापकों की भूमिका एवं दायित्व।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)**
  - प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा
  - बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान
  - स्कूलों में पाठ्यक्रम एवं शिक्षण शास्त्र
  - शिक्षक
  - समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा
  - स्कूल शिक्षा के लिए मानक निर्धारण एवं प्रत्यापन
- राजस्थान की समसामयिक बाल कल्याणकारी शैक्षिक योजनाएँ

Level-I

(For a person who intends to be a teacher for Class I to V)
(Total Questions : 30 Total Marks : 30)

- **Child Development :** Concept of growth and development, Dimensions and Principles of Development. Factors affecting development (specially in the context of family and school) and their relationship with learning.
  - Role of Heredity and Environment.
- **Individual Differences :** Meaning, types and Factors affecting individual differences. Understanding individual differences.
  - **Personality :** Concept and types of personality, Factors responsible for shaping it. Its measurement.
  - **Intelligence :** Concept, Theories and its measurement. Multiple Intelligence. Its implication.
- Understanding diverse learners: Backward, Mentally retarded, gifted, creative, disadvantaged- deprived, CWSN, children with learning disabilities.
  - Learning Difficulties.
  - **Adjustment :** Concept and ways of adjustment. Role of teacher in the adjustment.
- Meaning and Concept of learning. Factors Affecting learning
  - Theories of learning and their implication
  - How Children learn? Learning processes, Reflection, Imagination and Argument
  - Motivation and Implications for Learning
- Teaching learning processes, Teaching learning strategies and methods in the context of National Curriculum Framework 2005.
  - Meaning and purposes of Assessment, Measurement and Evaluation. Comprehensive and Continuous Evaluation. Construction of Achievement Test, Learning Outcomes.
  - Action Research.
  - Right to Education Act 2009 (Role and Responsibilities of Teachers)
- National Education Policy 2020
  - Early Childhood Care and Education
  - Foundational Literacy and Numeracy
  - Curriculum and Pedagogy in Schools
  - Teachers
  - Equitable and Inclusive Education
  - Standard-setting and Accreditation
- Contemporary Child welfare educational schemes of Rajasthan

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	मनोविज्ञान : एक सामान्य परिचय	1
	खण्ड - I	**12–48**
1	बाल विकास : वृद्धि एवं विकास की संकल्पना	12
2	बाल विकास की विभिन्न अवस्थाएँ एवं आयाम	17
3	विकास के सिद्धान्त व विकास को प्रभावित करने वाले कारक	32
4	बालक के विकास में वंशानुक्रम एवं वातावरण की भूमिका	39
	खण्ड - II	**49–84**
5	व्यक्तिगत विभिन्नताएँ	49
6	व्यक्तित्व की संकल्पना, प्रकार एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक, मापन	56
7	बुद्धि (संकल्पना, सिद्धान्त एवं इसका मापन, बहुबुद्धि सिद्धान्त एवं इसके निहितार्थ)	69
	खण्ड - III	**85–119**
8	विविध अधिगमकर्ताओं की समझ	85
9	अधिगम में आने वाली कठिनाईयाँ	100
10	समायोजन की संकल्पना एवं तरीके, समायोजन में अध्यापक की भूमिका	114
	खण्ड - IV	**120–170**
11	अधिगम का अर्थ एवं संकल्पना, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक	120
12	अधिगम के सिद्धान्त एवं इनके निहितार्थ	125
13	बच्चे सीखते कैसे हैं, अधिगम की प्रक्रियाएँ, चिंतन, कल्पना एवं तर्क	151
14	अभिप्रेरणा एवं इसके अधिगम के लिए निहितार्थ	163
	खण्ड - V	**171–224**
15	शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाएँ, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005 के संदर्भ में	171
16	आकलन, मापन, मूल्यांकन का अर्थ एवं उद्देश्य, समग्र एवं सतत मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण, सीखने के प्रतिफल	182
17	क्रियात्मक अनुसंधान	206
18	शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009	211
	खण्ड - VI	**225–234**
19	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 [NEP 2020]	225
	खण्ड - VII	**235–240**
20	राजस्थान की समसामयिक बाल कल्याणकारी शैक्षिक योजनाएँ	235

विज्ञप्ति
2022

REET#Level-I (1-5)

23 जुलाई, 2022 को आयोजित (उत्तर सहित)

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

1. निम्नलिखित में से कौन-सा या कौन-से कथन असत्य है/हैं?
(a) यह समझना जरूरी नहीं है कि प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है।
(b) बच्चा एक एकीकृत पूर्ण के रूप में विकसित होता है।
(c) विकास के एक पहलू में किसी समस्या की दूसरों को प्रभावित करने की सम्भावना होती है।
(d) विकास एक आनुक्रमिक प्रक्रिया है।
(A) (a), (b) और (c) (B) (b) और (c)
(C) (c) और (d) (D) केवल (a)

2. .....तब होता या होती है, जब परिपक्वता और अनुभव के कारण मनुष्य में क्रमबद्ध और प्रगतिशील परिवर्तन होते हैं।
(A) वृद्धि (B) विकास
(C) शारीरिक बदलाव (D) मानसिक परिवर्तन

3. निम्नलिखित में से कौन-सी बचपन की विशेषता नहीं है?
(A) प्राक्-टोली (B) अनुकरणीय आयु
(C) सवाल करने की आयु (D) खिलौना आयु

4. प्रकृति एवं पोषण विवाद निम्नलिखित में से किससे संबंधित है?
(A) आनुवंशिकी एवं वातावरण (B) व्यवहार एवं वातावरण
(C) वातावरण एवं जीव-विज्ञान (D) वातावरण एवं पालन-पोषण

5. प्रतिभाशाली बालक की बुद्धि लब्धि होती है—
(A) 130 (B) 140 (C) 55 (D) 120

6. स्कूलों को व्यक्तिगत भिन्नताओं का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि—
(A) प्रत्येक छात्र को विशिष्ट महसूस करवाने हेतु।
(B) छात्रों के बीच के अन्तर को कम करने हेतु।
(C) छात्रों एवं छात्राओं की क्षमताओं और प्रदर्शन को नहीं जानने के लिए।
(D) समझने के लिए कि छात्र सीखने में समर्थ या असमर्थ क्यों हो रहे हैं।

7. 16 वर्ष आयु का बच्चा बुद्धिलब्धि परीक्षण में 75 अंक प्राप्त करता है, उसकी मानसिक आयु.....वर्ष होगी—
(A) 8 (B) 14 (C) 15 (D) 12

8. प्रत्येक व्यक्ति का कार्य निश्चित योग्यताओं का प्रतिबिम्ब होता है, किसी विशेष कार्य को करने में व्यक्ति अपनी समस्त मानसिक योग्यताओं में से कुछ को प्रतिदर्श के रूप में चुनाव कर लेता है। यह सिद्धांत किसने दिया?
(A) थॉर्नडाइक (B) थर्सटन (C) गिलफोर्ड (D) थॉमसन

9. निम्न में से कौन-सी व्यक्तित्व मापन की प्रक्षेपी विधि है?
(A) निर्धारण मापनी (B) अवलोकन
(C) साक्षात्कार (D) कथानक संप्रत्यक्षण परीक्षण

10. सृजनात्मकता मुख्यतः किससे सम्बन्धित है?
(A) अतिसक्रियता (B) कम बोधगम्यता
(C) अभिसारी चिन्तन (D) अपसारी चिन्तन

11. निम्नलिखित में से कौन-सी स्थिति समायोजन को बढ़ावा देती है?
(A) तीव्र चिन्ता
(B) अपराध बोध के बारे में जुनूनी सोच
(C) बीमारी का डर
(D) विक्षिप्त भय और चिंता से मुक्ति

12. प्रतिभाशाली बालक के लक्षण क्या हैं?
(i) अभिव्यक्ति में नव्यता (ii) जिज्ञासा
(iii) वार्तालाप प्रियता (iv) अतिसक्रियता
(A) (i) और (iv) (B) (i) और (ii)
(C) (ii) और (iv) (D) (iii) और (iv)

13. बुद्धि लब्धि के लिए निम्नलिखित फॉर्मूला किसने दिया?

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{कालानुक्रमिक आयु}} \times 100$$

(A) विलियम स्टर्न (B) टर्मन
(C) बिने (D) गाल्टन

14. रवि का बुद्धि परीक्षण इंगित करता है कि वह औसत से लेकर, औसत से अधिक बुद्धिमता की श्रेणी में आता है। हालांकि पढ़ने, वर्तनी, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान में उसके ग्रेड बहुत कम हैं। उसके गणित के ग्रेड काफी अधिक हैं। रवि लेखक कौशल में अच्छा है। रवि में अधिक सम्भावना है—
(A) डिसकैल्कुलिया (गणित से संबंधित विकृति)
(B) डिसग्राफिया (लेखन से संबंधित विकृति)
(C) डिसलेक्सिया (पढ़ने से संबंधित विकृति)
(D) डिसफेजिया (बोलने से संबंधित विकृति)

15. ''सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की एक प्रक्रिया है।'' यह कथन किस शिक्षाविद् के द्वारा दिया गया?
(A) स्किनर (B) वुडवर्थ
(C) क्रो एवं क्रो (D) गेट्स एवं अन्य

16. कक्षा-2 की छात्रा सृष्टि को अध्यापिका ने मूल गणित विषय के सवाल करवाये, अगले दिन उसने बाजार में सामान खरीदने के उपरान्त दुकानदार द्वारा की गयी योग की गलती को चिह्नित करके सही करवाया। यह अधिगम का कौन-सा प्रकार है?
(A) नकारात्मक स्थानान्तरण (B) सकारात्मक स्थानान्तरण
(C) द्विपक्षीय स्थानान्तरण (D) शून्य स्थानान्तरण

विज्ञप्ति
2021

REET#Level-I (1-5)

26 सितम्बर, 2021 को आयोजित (उत्तर सहित)

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

1. अलबर्ट बन्डूरा द्वारा प्रस्तावित अधिगम का सिद्धान्त है?
(A) शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धान्त
(B) संज्ञानात्मक सिद्धान्त
(C) अंतर्दृष्टि अधिगम
(D) सामाजिक अधिगम सिद्धान्त

2. रेमण्ड कैटेल द्वारा कितने व्यक्तित्व कारक प्रस्तावित किये गये हैं?
(A) 05 (B) 14 (C) 16 (D) 08

3. निम्न में से कौनसा मास्लो की आवश्यकताओं के पदानुक्रम में सम्मिलित नहीं है?
(A) दैहिक आवश्यकताएँ (B) व्यक्तिवाद एवम् समूहवाद
(C) स्नेह एवम् सम्बद्धता (D) आत्मसिद्धि

4. एक व्यक्ति में एक समय दो विपरीत इच्छाओं का होना कहलाता है?
(A) द्वन्द्व (B) कुंठा (C) चिन्ता (D) दबाव

5. निम्नलिखित में से कौनसा अनुसंधान स्टीफेन कोरे से संबंधित है?
(A) आधारभूत अनुसंधान (B) व्यवहारात्मक अनुसंधान
(C) वैज्ञानिक अनुसंधान (D) क्रियात्मक अनुसंधान

6. उपचारात्मक शिक्षण किस प्रकार के बालकों के लिये प्रयुक्त होता है?
(A) तेजी से सीखने वाले (B) धीमे से सीखने वाले
(C) प्रतिभाशाली बालक (D) रचनात्मक से सीखने वाले

7. शिक्षण की खेलकूद विधि किस सिद्धान्त पर आधारित है?
(A) शिक्षण की विधियों के सिद्धान्त
(B) वृद्धि और विकास के सिद्धान्त
(C) शिक्षण के समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
(D) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम

8. एन.सी.एफ. 2005 की राष्ट्रीय स्टियरिंग समिति के अध्यक्ष कौन थे ?
(A) प्रो. कोठारी (B) प्रो. मेहरोत्रा
(C) प्रो. यशपाल (D) प्रो. राम मूर्ति

9. आर.टी.ई. अधिनियम, 2009 किस आयु समूह के बालकों के लिये है ?
(A) 5 – 12 (B) 12 – 18
(C) 7 – 15 (D) 6 – 14

10. निम्नलिखित में से कौनसा दैहिक अभिप्रेरक नहीं है ?
(A) उपलब्धि (B) भूख (C) प्यास (D) नींद

11. शिक्षण–अधिगम का मनोवैज्ञानिक आधार किस पर निर्भर करता है?
(A) अध्यापन शैली (B) विषय–वस्तु
(C) भाषा (D) सामाजिक–आर्थिक स्तर

12. आर.टी.ई. अधिनियम, 2009 के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के लिये विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात होना चाहिये ?
(A) 25 : 1 (B) 35 : 1
(C) 40 : 1 (D) 30 : 1

13. 'मध्यावधि परीक्षा' एक उदाहरण है?
(A) रचनात्मक मूल्यांकन का (B) मानदण्ड–संदर्भित मूल्यांकन का
(C) योगात्मक मूल्यांकन का (D) नैदानिक मूल्यांकन का

14. कौन–सा रोग वंशानुगत है ?
(A) ए.डी.एच.डी. (B) फीनोइलकिटोनूरीया
(C) पारकिन्सन्स (D) एच.आई.वी.एड्स

15. निमनलिखित में से कौन–सा बुद्धि का निष्पादन परीक्षण है ?
(A) भाटिया बैटरी (B) रोर्शा परीक्षण
(C) डब्लू.ए.आई.एस. (D) रेवन का एस.पी.एम.

16. ''मानव विकास आजीवन चलता रहता है, यद्यपि दो व्यक्ति बराबर नहीं होते हैं, किन्तु सभी सामान्य बालकों में विकास का क्रम एक सा रहता है।'' यह कथन विकास के किस सिद्धांत की ओर संकेत करता है ?
(A) सतत विकास का सिद्धांत
(B) परस्पर संबंध का सिद्धांत
(C) समान प्रतिरूप का सिद्धांत
(D) सामान्य से विशिष्ट अनुक्रियाओं का सिद्धांत

17. ज़ीन पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अंतिम अवस्था कौनसी है ?
(A) संवेदिक पेशीय अवस्था (B) अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(C) उत्तर संक्रियात्मक अवस्था (D) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

18. आनुवंशिकी के जनक हैं ?
(A) ग्रेगर मेन्डल (B) थॉमस हन्ट मार्गन
(C) जेम्स वाट्सन (D) चार्ल्स डार्विन

19. व्यक्तित्त्व का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत किसने प्रतिपादित किया है?
(A) अब्राहम मास्लो (B) सिगमण्ड फ्रायड
(C) कार्ल रोजर्स (D) ज़ीन पियाजे

विज्ञप्ति
2015

REET#Level-I (1-5)

16 फरवरी, 2016 को आयोजित (उत्तर सहित)

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

1. निम्न में से कौन सा मूल्यांकन के त्रिकोण का भाग नहीं है—
(A) शैक्षिक उद्देश्य (B) मूल्यांकन
(C) शिक्षण अनुभव (D) अधिगम अनुभव

2. क्रियात्मक अनुसंधान के महत्त्व के बारे में से कौन सा कथन सही नहीं है—
(A) उपभोक्ता ही अनुसंधानकर्ता है।
(B) समस्याओं का हल शीघ्रता से प्राप्त हो जाता है।
(C) समस्याओं का हल अभ्यास में ले आया जाता है और उसका मूल्यांकन नहीं किया जाता है।
(D) इनमें से कोई नहीं

3. आर.टी.ई. एक्ट 2009 के अनुसार शिक्षक हेतु प्रति सप्ताह कार्य घंटे हैं—
(A) 40 घंटे (B) 42 घंटे
(C) 45 घंटे (D) 48 घंटे

4. NCF 2005 बल देता है—
(A) करके सीखने पर (B) रटने पर
(C) समस्या हल करने पर (D) उपरोक्त सभी

5. शारीरिक विकास का क्षेत्र है—
(A) स्नायुमण्डल (B) माँसपेशियों की वृद्धि
(C) एंडोक्राइन ग्लैण्ड्स (D) उपरोक्त सभी

6. ''वातावरण वह बाहरी शक्ति है, जो हमें प्रभावित करती है।'' किसने कहा था—
(A) वुडवर्थ (B) रॉस
(C) एनास्टसी (D) इनमें से कोई नहीं

7. तर्क, जिज्ञासा तथा निरीक्षण शक्ति का विकास होता है ..... की आयु पर।
(A) 7 वर्ष (B) 11 वर्ष
(C) 9 वर्ष (D) 6 वर्ष

8. निम्न में से कौनसा वंशानुक्रम का नियम नहीं है—
(A) समानता (B) भिन्नता
(C) प्रत्यागमन (D) अभिप्रेरणा

9. ..... की अवस्था तक बालक की दृष्टि एवं श्रवण इन्द्रियाँ पूर्ण विकसित हो चुकती हैं।
(A) 3 अथवा 4 वर्ष (B) 6 अथवा 7 वर्ष
(C) 8 अथवा 9 वर्ष (D) इनमें से कोई नहीं

10. इस अवस्था में बालकों में नयी खोज करने की और घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है—
(A) शैशव (B) उत्तर बाल्यकाल
(C) किशोरावस्था (D) प्रौढ़ावस्था

11. अधिगम अन्तरण का थॉर्नडाइक सिद्धान्त कहा जाता है—
(A) समानता सिद्धान्त
(B) अनुरूप तत्त्वों का सिद्धान्त
(C) औपचारिक नियमों का सिद्धान्त
(D) इनमें से कोई नहीं

12. अभिप्रेरणा वर्णित होती है—
(A) ज्ञानात्मक जागृति द्वारा (B) भावात्मक जागृति द्वारा
(C) दोनों A और B (D) इनमें से कोई नहीं

13. चिन्तन मानसिक क्रिया का ..... पहलू है।
(A) ज्ञानात्मक (B) भावात्मक
(C) क्रियात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

14. संकेत अधिगम के अन्तर्गत सीखा जाता है—
(A) पारम्परिक अनुकूलन (B) मनोविज्ञान
(C) वातावरण (D) मनोदैहिक

15. निम्न में से कौन सा उदाहरण अर्जित प्रेरक का है—
(A) भूख (B) पुरस्कार
(C) रुचि (D) विश्राम

16. चिन्तन प्रारम्भ होने के लिए क्या आवश्यक है—
(A) पूर्वानुभव (B) भाषा
(C) तर्क (D) समस्या

17. बुद्धि-लब्धि सम्प्रत्यय विकसित किया—
(A) बिने ने (B) रीड ने
(C) टर्मन ने (D) कैटेल ने

18. बाह्य आभास के आधार पर व्यक्तित्व का वर्णन कहा जाता है—
(A) गहन दृष्टिकोण (B) सतही दृष्टिकोण
(C) मानकीय दृष्टिकोण (D) प्रेक्षणात्मक दृष्टिकोण

19. व्यक्तिगत भेद पाये जाते हैं—
(A) बुद्धि स्तर में (B) अभिवृत्ति में
(C) गतिवाही योग्यता में (D) उपरोक्त सभी में

विज्ञप्ति
2012

REET#Level-I (1-5)

(उत्तर सहित)

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

1. संज्ञानात्मक विकास में वंशक्रम निर्धारित करता है—
(A) मस्तिष्क जैसी शारीरिक संरचना के मूलभूत स्वभाव की
(B) शारीरिक संरचना के विकास की
(C) सहज प्रतिवर्ती क्रियाओं के अस्तित्व की
(D) इनमें से सभी

2. निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है?
(A) जो अध्यापक यह विश्वास करता है कि विकास प्रकृति की वजह से होता है, वह अनुभव प्रदान करने को महत्व नहीं देता
(B) प्रारम्भिक अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं और अध्यापक का हस्तक्षेपण भी महत्वपूर्ण होता है
(C) प्रारम्भिक जीवन की नकारात्मक घटनाओं के प्रभाव से कोई भी अध्यापक बचाव नहीं कर सकता
(D) व्यवहारात्मक परिवर्तन के संदर्भ में विकास वातावरणीय प्रभावों के फलस्वरूप होता है।

3. निम्न में से कौनसी विशेषता परिपक्वता को अधिगम से अलग करती है?
(A) यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है
(B) यह अभ्यास पर निर्भर करती है
(C) यह प्रेरकों पर निर्भर करती है
(D) यह जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है

4. निम्न में से कौनसा कथन विकास के सम्बन्ध में सही नहीं है?
(A) विकास प्रतिमानों की कुछ निश्चित विशेषताओं की भविष्यवाणी की जा सकती है
(B) विकास का उद्देश्य वंशानुगत सम्भाव्य क्षमता का विकास करना है
(C) विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सम्भाव्य खतरे नहीं होते हैं
(D) प्रारम्भिक विकास बाद के विकास से अधिक महत्वपूर्ण है।

5. दल या गैंग का सदस्य होने से समाजीकरण उत्तर बाल्यावस्था में बेहतर होता है। निम्न में से कौनसा ..... विचार के विपरीत हैं?
(A) वयस्कों पर निर्भर न होकर सीखता है
(B) जिम्मेदारियों को निभाना सीखता है
(C) अपने समूह के प्रति वफादार होना सीखता है
(D) छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करते हुये, अपने गैंग के सदस्यों से लड़ाई मोल लेता है।

6. 9 वर्ष के बालक की नैतिक तर्कना आधारित होती है—
(A) किसी कार्य के भौतिक परिणाम उसकी अच्छाई या बुराई को निर्धारित करते हैं
(B) कोई कार्य सही होना इस बात पर निर्भर करता है कि उससे व्यक्ति की अपनी आवश्यकता पूर्ति होती है
(C) नियमों का पालन करने के बदले में कुछ लाभ मिलना चाहिए
(D) सही कार्य वह है जो उस व्यक्ति के द्वारा किया जाये जो अन्य व्यक्तियों को अपने व्यवहार से प्रभावित है।

7. निम्न में से कौनसा उदाहरण अभिप्रेरणा का परिणाम नहीं है?
(A) कृष्णा ने नृत्य का समय एक घंटे से बढ़ाकर दो घंटे कर दिया है
(B) जॉन स्टुअर्ट मिल ने 12 वर्ष की उम्र में दर्शन का अध्ययन कर दिया था
(C) जगन ने 'श्वास लेने की प्रक्रिया' में रुचि दिखानी प्रारम्भ कर दी है
(D) राम ने तेजी से आधुनिक एवं प्राचीन ऐतिहासिक प्रवृत्तियों में सहसम्बन्ध स्थापित करने में प्रगति की है।

8. निम्न में से क्या एक प्रभावी प्रशंसा के रूप में अध्यापक के लिए कार्य करेगा?
(A) विद्यार्थियों के अवधान को उनके कार्य से सम्बन्धित व्यवहार पर केन्द्रित करता है
(B) विद्यार्थियों के वर्तमान कार्य निष्पादन को उनके समूह के अन्य साथियों के संदर्भ वर्णित करता है
(C) विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं अथवा कार्य निष्पादन के महत्व की सूचना देता है
(D) वह विद्यार्थी अपने व्यवहार को नियंत्रित नहीं कर पाते तो उन्हें सकारात्मक व्यवहारात्मक समर्थन प्रदान करता है।

9. निम्न में से कौनसा उदाहरण अधिगम को प्रदर्शित करता है?
(A) हाथ जोड़कर अध्यापक का अभिवादन करना
(B) स्वादिष्ट भोजन देखकर मुँह में लार का आना
(C) चढ़ना, भागना एवं फेंकना तीन से पाँच वर्ष की अवस्था में
(D) इनमें से सभी

10. निम्न में से कौनसा चिन्तन की प्रक्रिया में सबसे कम महत्वपूर्ण है?
(A) चित्र (B) प्रतीक एवं चिह्न
(C) मांसपेशीय क्रियायें (D) भाषा

11. योगात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है—
(A) समय विशेष एवं विभिन्न कार्यों पर एक विद्यार्थी ने कितना अच्छा निष्पादित किया है, का पता लगाना
(B) अधिगम को सुगम बनाना व ग्रेड न प्रदान करना
(C) ऐसे विद्यार्थी का पता लगाना जो अपने साथियों के समकक्ष सम्प्राप्ति में कठिनाई अनुभव कर रहा है
(D) अगली इकाई के अनुदेशन से पूर्व प्रगति का पता लगाना

12. राजू खरगोश से डरता था। शुरू में खरगोश को राजू से काफी दूर रखा गया। आने वाले दिनों में हर रोज खरगोश और राजू के बीच की दूरी कम कर दी गई। अन्त में राजू की गोद में खरगोश को रखा गया और राजू खरगोश से खेलने लगा। यह प्रयोग उदाहरण है—
(A) प्रयत्न एवं त्रुटि सिद्धान्त का
(B) शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त का
(C) क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त का
(D) इनमें से सभी

13. बहिर्मुखी विद्यार्थी अन्तर्मुखी विद्यार्थी से किस विशेषता के आधार पर भिन्न होता है?
(A) मजबूत भावनायें, पसंदगी एवं नापसंदगी
(B) मन ही मन परेशान होने की अपेक्षा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है
(C) अपने बौद्धिक कार्यों में डूबा रहता है
(D) बोलने की अपेक्षा लिखने में बेहतर

14. निम्न में से कौनसा कथन बुद्धि के बारे में सत्य नहीं है?
(A) यह एक व्यक्ति की मानसिक क्षमता है

विज्ञप्ति
2011

REET#Level-I (1-5)

(उत्तर सहित)

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

1. 'खिलौनों की आयु' कहा जाता है—
(A) पूर्व बाल्यावस्था को (B) उत्तर बाल्यावस्था को
(C) शैशवावस्था को (D) इनमें से सभी

2. निम्न में से कौनसी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है—
(A) दल/समूह में रहने की अवस्था
(B) अनुकरण करने की अवस्था
(C) प्रश्न करने की अवस्था
(D) खेलने की अवस्था

3. उत्तर बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्व में परिवर्तन समझने लगते हैं—
(A) द्रव्यमान (B) द्रव्यमान और संख्या
(C) संख्या (D) द्रव्यमान, संख्या व क्षेत्र

4. विकास का अर्थ है—
(A) परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
(B) अभिप्रेरणा के फलस्वरुप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
(C) अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरुप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
(D) परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरुप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला

5. विकास के संदर्भ में निम्न में से कौनसा कथन सत्य नहीं है—
(A) विकास की प्रत्येक अवस्था के अपने खतरे हैं
(B) विकास उकसाने/बढ़ावा देने से नहीं होता है
(C) विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है
(D) विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषता होती है

6. निम्न में से कौनसा विकासात्मक कार्य उत्तर बाल्यावस्था के उपयुक्त नहीं है–
(A) सामान्य खेलों के लिये आवश्यक शारीरिक कुशलताएँ सीखना
(B) पुरुषोचित या स्त्रियोचित सामाजिक भूमिकाओं को प्राप्त करना
(C) वैयक्तिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना
(D) अपने हमउम्र बालकों के साथ रहना सीखना

7. सामान्य परिपक्वन से पहले प्रशिक्षित प्राप्त करना प्रायः
(A) सामान्य कौशलों के निष्पादन के संदर्भ में बहुत लाभकारी होता है।
(B) कुल मिलाकर हानिकारक होता है
(C) दीर्घकालिक दृष्टि से लाभकारी होता है
(D) लाभकारी हो या हानिकारक, यह इस पर निर्भर करता है कि प्रशिक्षण में किस प्रकार की विधि का प्रयोग किया गया है।

8. पाँच वर्ष का राजू अपनी खिड़की के बाहर तूफान को देखता है। बिजली चमकती है और कड़कने की आवाज आती है। राजू शोर सुनकर उछलता है। बार-बार यह घटना होती है। फिर कुछ देर शांति के पश्चात् बिजली कड़कती है। राजू बिजली की गर्जना सुनकर उछलता है। राजू का उछलना सीखने के किस सिद्धान्त का उदाहरण है—
(A) शास्त्रीय अनुबंधन (B) क्रियाप्रसूत अनुबंधन
(C) प्रयत्न एवं भूल (D) इनमें से कोई नहीं

9. सकारात्मक दण्ड का निम्न में से कौनसा उदाहरण है—
(A) मित्रों के द्वारा उपहास
(B) मित्रों के साथ समय बरबाद करना
(C) मीनमेख निकालना बंद करना
(D) इनमें से सभी

10. निम्न में से कौनसा कथन अभिप्रेरणा एक प्रक्रिया के संदर्भ में उपयुक्त नहीं है—
(A) यह व्यक्ति को लक्ष्य की ओर ले जाता है
(B) यह व्यक्ति की शारीरिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है
(C) यह मनोवैज्ञानिक आकांक्षा को प्राप्त करने में सहायता करता है
(D) यह व्यक्ति को अप्रिय स्थिति से दूर रखता है

11. किसी उद्दीपन के निरन्तर दिये जाने से व्यवहार में होने वाला अस्थायी परिवर्तन कहलाता है—
(A) अभ्यस्तता (B) अधिगम
(C) अस्थायी अधिगम (D) अभिप्रेरणा

12. विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों में परिवर्तन के लिये निम्न में से किस विधि का प्रयोग अध्यापक को नहीं करना चाहिए—
(A) दबाव से किसी बात या विचार के लिये राजी करना
(B) किसी विचार को दोहराना अथवा दृढ़तापूर्वक व्यवहार
(C) किसी प्रशंसनीय व्यक्ति के द्वारा समर्थन एवं स्वीकृति
(D) संदेश के साथ साहचर्य स्थापित करना

13. उपलब्धि अभिप्रेरक के सम्बन्ध में निम्न में से कौनसा कथन सही है—
(A) उपलब्धि अभिप्रेरक जीवित रहने के लिये आवश्यक है
(B) यदि व्यक्तिगत क्षमताओं की संतुष्टि महत्त्वपूर्ण है तो उपलब्धि अभिप्रेरक को विकास प्रेरक कहा जा सकता है
(C) यदि व्यक्तियों के मध्य प्रतियोगिता पर बल है, तो उपलब्धि अभिप्रेरक को सामाजिक अभिप्रेरक कहा जा सकता है
(D) इनमें से सभी

14. 6 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक रुचि लेना प्रारम्भ करते हैं—
(A) धर्म में (B) मानव शरीर में
(C) यौन सम्बन्धों में (D) विद्यालय में

15. कौन सिद्धान्त व्यक्त करता है कि मानव मस्तिष्क एक बर्फ की बड़ी चट्टान के समान है जो कि अधिकांशतः छिपी रहती है एवं उसमें चेतन के तीन स्तर हैं—
(A) गुण सिद्धान्त (B) प्रकार सिद्धान्त
(C) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (D) व्यवहारवाद सिद्धान्त

मनोविज्ञान : एक सामान्य परिचय
[Psychology : A General Introduction]

- प्रारंभ में मनोविज्ञान का अध्ययन दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में किया जाता था।
- आरंभिक काल में मनोविज्ञान का अध्ययन इसके ग्रीक (Greek) अर्थ के अनुसार ही किया जाता था, जैसे–मनोविज्ञान अंग्रेजी शब्द 'साइकोलॉजी' (Psychology) का हिंदी रूपांतरण है।

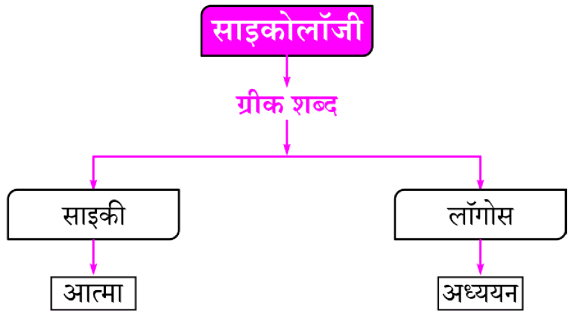

- 'साइकोलॉजी' (Psychology) शब्द दो ग्रीक शब्दों 'साइकी' (Psyche) एवं 'लॉगोस' (Logos) से मिलकर बना है, जिसमें साइकी (Psyche) का अर्थ आत्मा और लॉगोस (Logos) का अर्थ अध्ययन या विज्ञान है।
- इस प्रकार प्रारम्भ में मनोविज्ञान का आत्मा के विज्ञान के रूप में अध्ययन किया जाता था, लेकिन वर्तमान समय में मनोविज्ञान का यह अर्थ प्रासंगिक नहीं है।

मनोविज्ञान का क्रमिक विकास
(Successive Development of Psychology)

- वर्तमान में मनोविज्ञान का जो स्वरूप हमारे सामने है वह लंबे समय के क्रमिक विकास का परिणाम है। समय के साथ-साथ मनोविज्ञान के क्षेत्र व स्वरूप में गुणात्मक तथा विकासात्मक परिवर्तन आए। मनोविज्ञान के स्वरूप में परिवर्तन आने के साथ-साथ इसकी विषय-वस्तु में भी परिवर्तन आए तथा विषय-वस्तु के आधार पर मनोविज्ञान की परिभाषाओं में भी परिवर्तन आया।
- मनोविज्ञान (Psychology) के परिवर्तित स्वरूप को निम्नलिखित चार अवस्थाओं/चरणों के माध्यम से समझा जा सकता है—
  1. प्रथम अवस्था-आत्मा के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (First Stage-Psychology as the Study of Soul)
  2. द्वितीय अवस्था-मन के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (Second Stage-Psychology as the study of Mind)
  3. तृतीय अवस्था-चेतना के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (Third Stage-Psychology as the study of Consciousness)
  4. चतुर्थ अवस्था व्यवहार के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (Fourth Stage-Psychology as the study of Behaviour)

1. प्रथम अवस्था-आत्मा के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान

- 16वीं शताब्दी तक दार्शनिक मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान मानते थे, तब मनोविज्ञान का उद्देश्य आत्मा की खोज करना और इसकी व्याख्या करना था।
- इस मत के प्रमुख समर्थक देकार्त, प्लेटो एवं अरस्तू थे।
- 16वीं शताब्दी के अंत में इस मत को अस्वीकृत कर दिया गया क्योंकि ना तो आत्मा का स्वरूप स्पष्ट है, ना ही इसके अस्तित्व के कोई ठोस सबूत हैं और ना ही इसके अध्ययन के कोई निर्धारित मानक (Norms) हैं।

2. द्वितीय अवस्था-मन के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान

- 17वीं शताब्दी तथा 18वीं शताब्दी के अंत तक मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में पढ़ा गया।
- इस मत के प्रमुख समर्थक – काँट, पम्पोनॉजी, हॉब्स, लॉक आदि थे।
- 18वीं शताब्दी के अंत तक इस मत को भी अस्वीकृत कर दिया गया क्योंकि मन का न तो स्पष्ट अर्थ एवं स्वरूप है और ना ही इसके अध्ययन का कोई स्पष्ट तरीका।

3. तृतीय अवस्था-चेतना के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान

- 19वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान (Science of Consciousness) के रूप में पढ़ा जाने लगा।
- इसी अवस्था में मनोविज्ञान की एक स्वतंत्र विषय के रूप में उत्पत्ति हुई जब 1879 ई. में विलियम वुंट ने जर्मनी के लिपजिंग विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रथम औपचारिक प्रयोगशाला की स्थापना की।
- विलियम वुंट के अलावा इस मत के प्रमुख समर्थकों में प्रसिद्ध अमेरिकन मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स थे जिन्होंने 1890 ई. में मनोविज्ञान की प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी' (मनोविज्ञान के सिद्धांत) लिखी तथा 'चेतना का प्रवाह' (Stream of Consciousness) नामक संप्रत्यय प्रस्तुत किया।
- लेकिन प्रसिद्ध मनोविश्लेषणवादी सिगमंड फ्रॉयड ने इस मत को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि व्यक्ति के व्यक्तित्व में चेतना से ज्यादा अचेतन (Unconscious) का महत्त्व होता है।
- फ्रॉयड ने बताया कि व्यक्तित्व में चेतन का योगदान '1/10' होता है, जबकि अचेतन का योगदान काफी अधिक '9/10' होता है।

4. चतुर्थ अवस्था व्यवहार के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान

- 20वीं शताब्दी से मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान (Science of Behaviour) के रूप में परिभाषित किया जाने लगा।
- 1913 ई. में व्यवहारवादी विचारधारा के जनक जे.बी. वॉटसन ने व्यवहार शब्द को अधिक विस्तृत बनाते हुए, ''मनोविज्ञान को संपूर्ण प्राणियों के व्यवहार के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया।''

2 बाल विकास की विभिन्न अवस्थाएँ एवं आयाम [Different Stages and Dimensions of Child Development]

- अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों ने विकास के विभिन्न अवस्थाओं का वर्गीकरण अलग-अलग प्रकार से किया है।
- सामान्य रूप से ये अवस्थाएँ हैं—
  - ✧ **गर्भावस्था**
  - ✧ **बाल्यावस्था**
  - ✧ **प्रौढ़ावस्था।**
  - ✧ **शैशवावस्था**
  - ✧ **किशोरावस्था**
- आयु के अनुसार इन अवस्थाओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है—

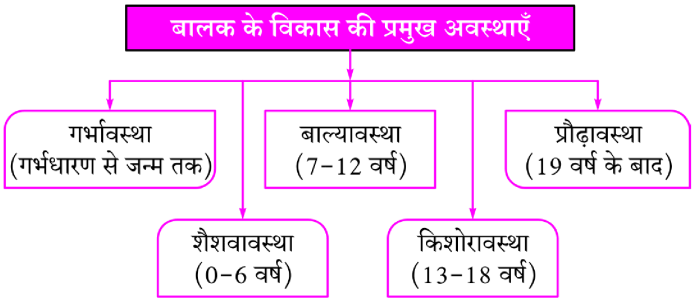

विकास की विभिन्न अवस्थाएँ (Different Stages of Development)

सेले के अनुसार		
(i)	शैशवकाल (Infancy)	1 से 5 वर्ष
(ii)	बाल्यकाल (Childhood)	5 से 12 वर्ष
(iii)	किशोरावस्था (Adolescence)	12 से 18 वर्ष
कॉलेसनिक के अनुसार		
(i)	पूर्व जन्मकाल (गर्भाधान से जन्म तक (Pre-natal)	जन्मपूर्वकाल
(ii)	शैशवकाल (Neonatal)	जन्म से 3 या 4 सप्ताह तक
(iii)	आरम्भिक शैशवकाल (Early Infancy)	1 मास से 15 मास तक
(iv)	उत्तर शैशवकाल (Late Infancy)	15 मास से 30 मास तक
(v)	पूर्व बाल्यकाल (Early Childhood)	2.5 वर्ष से 5 वर्ष तक
(vi)	मध्य बाल्यकाल (Middle Childhood)	5 से 9 वर्ष तक
(vii)	उत्तर बाल्यकाल (Late Childhood)	9 से 12 वर्ष तक
(viii)	किशोरावस्था (Adolescence)	15 से 15 वर्ष तक
(ix)	उत्तर किशोरावस्था (Late Adolescence)	15 से 21 वर्ष तक
रॉस के अनुसार		
(i)	शैशवकाल (Infancy)	1 से 3 वर्ष तक
(ii)	आरम्भिक बाल्यकाल (Early Childhood)	3 से 6 वर्ष तक
(iii)	उत्तर बाल्यकाल (Late Childhood)	6 से 12 वर्ष तक
(iv)	किशोरावस्था (Adolescence)	12 से 18 वर्ष तक

अर्नेस्ट जोन्स के अनुसार		
(i)	शैशवकाल (Infancy)	जन्म से 5 या 6 वर्ष तक
(ii)	बाल्यकाल (Childhood)	6 से 12 वर्ष तक
(iii)	किशोरावस्था (Adolescence)	12 से 18 वर्ष तक
(iv)	प्रौढ़ावस्था (Maturity or Adulthood)	18 वर्ष के बाद
हरलॉक के अनुसार		
(i)	गर्भावस्था	गर्भाधान से जन्म तक
(ii)	शैशवावस्था	जन्म से दो सप्ताह तक
(iii)	बचपनावस्था	तीसरे सप्ताह से 2 वर्ष तक
(iv)	पूर्व-किशोरावस्था	3 वर्ष से 6 वर्ष तक
(v)	उत्तर-बाल्यावस्था	7 वर्ष से 12 वर्ष तक
(vi)	वयःसंधि	12 वर्ष से 14 वर्ष तक
(vii)	पूर्व-किशोरावस्था	13-14 से 17 वर्ष तक
(viii)	उत्तर-बाल्यावस्था	18 से 21 वर्ष तक
(ix)	प्रौढ़ावस्था	21 वर्ष से 40 वर्ष तक
(x)	मध्यावस्था	41 वर्ष से 60 वर्ष तक
(xi)	वृद्धावस्था	60 वर्ष के बाद

गर्भावस्था (Gestation Period)

गर्भकालीन अवस्था में शारीरिक विकास

- शारीरिक विकास का प्रारम्भ **गर्भधारण** के साथ ही शुरू हो जाता है। भ्रूणावस्था में शारीरिक विकास सर्वाधिक तीव्र गति से होता है।
- गर्भकालीन अवस्था सामान्यतः **280 दिन** की होती है।
- गर्भावस्था को तीन भागों में बाँट सकते हैं—

(1) बीजावस्था—बीज (डिम्ब) की अवस्था गर्भधारण से **14 दिन तक** होती है। यह अण्डे जैसा होता है। इसे **युक्ता** कहते हैं। इसके अंदर **कोष्ठ विभाजन** की क्रिया चलती है।

- यह गर्भाशय में तैरता रहता है और लगभग 10 दिन बाद गर्भाशय की दीवार से चिपक जाता है।

3 विकास के सिद्धान्त व विकास को प्रभावित करने वाले कारक
[Principles of Development and Factors Affecting Development]

- बालक के विकास के बारे में ज्ञान देने वाले सिद्धांतों ने अनुसंधान तथा प्रवृत्तियों को प्रभावित किया है। इनमें से कुछ सिद्धान्त तो आदिकाल से चले आ रहे हैं।
- **गैरिसन** तथा अन्य के अनुसार ''जब बालक विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है तब उसमें कुछ परिवर्तन दिखाई देते हैं विभिन्न अध्ययनों एवं शोधों के माध्यम से यह सिद्ध हो चुका है कि बालक के विकास के दौरान होने वाले परिवर्तन निश्चित सिद्धांतों का अनुसरण करते हैं। इन्ही सिद्धांतों को विकास के सिद्धांत/नियमों के नाम से जाना जाता है।''

विकास के सिद्धान्त

1. समान प्रतिमान का सिद्धांत
- **एक जाति के जीवों में विकास का एक क्रम** पाया जाता है और विकास की गति का प्रतिमान भी समान रहता है।
- **गैसेल** के अनुसार, ''यद्यपि दो व्यक्ति समान नहीं होते हैं किन्तु सभी सामान्य बालकों में विकास का क्रम समान होता है।''
- **हरलॉक** ने लिखा है कि ''प्रत्येक प्रजाति चाहे पशु जाति हो या मानव जाति अपनी प्रजाति के अनुरूप ही विकास के प्रतिमानों का अनुसरण करती है।''
- मनुष्य चाहे अमेरिका में पैदा हुआ हो या भारत में, उसका शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, भाषा आदि का विकास अन्य व्यक्तियों के समान होता है।
- मानव प्रजाति के विकास पर भी यह सिद्धांत लागू होता है।

2. सामान्य से विशिष्ट क्रियाओं का सिद्धांत
- बालक के विकास के सभी क्षेत्रों में सर्वप्रथम सामान्य प्रतिक्रिया होती है उसके बाद वह **विशिष्ट रूप धारण** करती है।
- बालक प्रारम्भ में किसी वस्तु को पकड़ने के लिए शरीर के सभी अंगों को प्रयोग में लाता है किन्तु धीरे-धीरे वह उस वस्तु को पकड़ने के लिए विशिष्ट अंग का प्रयोग करने लगता है।
- शैशवावस्था में बालक किसी वस्तु को देखकर उसको पकड़ने के लिए हाथ, पैर, मुख, सिर आदि को चलाता है किन्तु आयु में वृद्धि होने पर वस्तु को पकड़ने के लिए केवल हाथ की प्रतिक्रिया करता है।
- बालक आरम्भ में केवल उत्तेजना अनुभव करता है। कालान्तर में वह संवेगों की अभिव्यक्ति करना भी सीख लेता है।
- भाषा का विकास भी क्रन्दन से आरम्भ होता है। निरर्थक-सार्थक शब्दों के माध्यम से वह वाक्यों के विकास तक पहुँचता है।

3. सतत् विकास का सिद्धांत
- मानव के विकास का क्रम **गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था** तक सतत् रूप से चलता रहता है।
- बालक में गुणों का विकास अचानक नहीं होता है। इनका विकास अनवरत् रूप से मन्द गति से होता रहता है।
- विकास की गति कभी तीव्र या कभी मन्द हो सकती है। कई अंगों का विकास किसी विशेष अवस्था में अधिक होता है।
- प्रजनन तंत्र में 14 से 20 वर्ष में सर्वाधिक विकास होता है। 4 वर्ष तक मस्तिष्क तीव्र गति से विकसित होता है।

4. परस्पर सम्बन्ध का सिद्धांत
- बालक के **विभिन्न गुण परस्पर सम्बन्धित** होते हैं। एक गुण का विकास जिस प्रकार से हो रहा है, अन्य गुण भी उसी अनुपात में विकसित होते हैं।
- तीव्र बुद्धि वाले बालक के मानसिक विकास के साथ ही शारीरिक और सामाजिक विकास भी तीव्र गति से होता है।
- बालक का जैसे-जैसे सामाजिक विकास होता है, वैसे-वैसे उसका नैतिक विकास भी होता है।
- शारीरिक और मानसिक क्षेत्रों में होने वाले विकास में बहुत अधिक सम्बन्ध होता है। यौन-परिपक्वता, रुचियों और व्यवहार में घनिष्ठ सह सम्बन्ध होता है।
- जिन बालकों का संवेगात्मक विकास उचित रूप में होता है, वे शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हैं।

5. विभिन्न अंगों के विकास की गति में भिन्नता
- भिन्न अंगों का विकास भिन्न गति से होता है। शरीर **के कुछ अंग अन्य अंगों की अपेक्षा जल्दी विकसित** होते हैं।
- 6 वर्ष की आयु तक मस्तिष्क विकसित होकर लगभग पूर्ण आकार प्राप्त कर लेता है जबकि हाथ-पैर, नाक-मुँह का विकास किशोरावस्था तक पूरा होता है।
- मानसिक विकास पर भी यही नियम लागू होता है। बालक में सामान्य बुद्धि का विकास 14 या 15 वर्ष की आयु में पूर्ण हो जाता है, किन्तु तर्क शक्ति मन्द गति के साथ विकसित होती रहती है।

6. मस्तकाधोमुखी क्रम का सिद्धांत
- शारीरिक विकास **सिर से पैरों की दिशा** में होता है। विकास पहले सिर के क्षेत्र में, फिर धड़ के क्षेत्र में, फिर पैरों के क्षेत्र में होता है।
- गति का नियंत्रण पहले शरीर के ऊपर वाले हिस्सों में आता है और फिर निचले हिस्सों में।
- लेटा हुआ बालक सिर को और धड़ को उठाना सीखता है। बैठना, घिसटकर चलना तथा खड़े होने सम्बन्धी क्रियाएँ बाद में करता है।

7. निकट से दूर क्रम का सिद्धांत
- विकास का **केन्द्र बिन्दु स्नायुमण्डल** होता है। पहले स्नायुमण्डल का विकास होता है। तत्पश्चात् स्नायुमण्डल के निकट के भागों का और

4 बालक के विकास में वंशानुक्रम एवं वातावरण की भूमिका [Role of Heredity & Environment in Development of a Child]

- व्यक्ति के विकास में मुख्य रूप से दो तत्वों अथवा कारको को उत्तरदायी माना गया है—
  - (A) **जैविक कारक (Biological Factors)**—जैविक विकास का आधार **वंशानुक्रम (Heredity)** होती है जिसके वाहक माता-पिता होते हैं।
  - (B) **सामाजिक कारक (Social Factors)**—व्यक्ति के सामाजिक विकास का आधार **वातावरण (Environment)** होता है।
- वातावरण एक विस्तृत अवधारणा है जिसके अंतर्गत उन परिस्थितियों को शामिल किया जाता है जो गर्भाधान के समय से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति पर अपना प्रभाव डालती है।
- बालक के गर्भावस्था के आने के साथ ही बालक को जिन गुणों की प्राप्ति हो जाती है, उन्हें **वंशानुक्रम के गुण** कहते हैं।
- बालक को उसके माता-पिता के अलावा उसके पूर्वजों से भी अनेक शारीरिक एवं मानसिक गुण प्राप्त होते हैं जिसे **आनुवांशिकता, वंशानुक्रम, वंश परम्परा, पैतृक गुण** आदि अनेक नामों से जाना जाता है।

वंशानुक्रम (Heredity)

- प्राणीशास्त्र के नियमों के अनुसार एक पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी को कुछ विशिष्ट गुण अथवा लक्षण हस्तांतरित करती है। इस हस्तान्तरण को **प्राणीशास्त्रीय या जैविकीय विरासत** कहते हैं।
- दूसरे शब्दों में माता-पिता और पूर्वजों के उस हस्तान्तरित किए हुए शारीरिक और मानसिक लक्षणों (traits) के मिश्रित रूप को ही वंशानुक्रम, वंश-परम्परा, पैतकृता या आनुवंशकिता कहा जाता है।
- वास्तव में आनुवांशिकता एक ऐसी जन्मजात शक्ति होती है जो प्राणी को एक निश्चित दिशा में विकसित होने में सहायता पहुँचाती है। वही उसकी आकृति रंग, कद, यौन, बुद्धि तथा शारीरिक और मानसिक क्षमताओं को निर्धारित करती है।
- आनुवांशिकता की शक्ति के कारण ही मानव से केवल मानव शिशु ही उत्पन्न होता है। उसी के कारण ही पशु से पशु, पक्षी से पक्षी और वनस्पति से वनस्पति का जन्म होता है।

परिभाषाएँ

- **एने. एनॉस्टेसी** के अनुसार, "आनुवांशिकता के कारक जन्म के पश्चात व्यक्ति के विकास को प्रभावित करते हैं और यह प्रभाव जीवनपर्यन्त चलता रहता है। यहाँ तक कि मृत्यु का समय भी आनुवांशिकता से प्रभावित होता है। जैसा कि देखा जाता है अलग-अलग परिवारों का जीवनकाल अलग-अलग हुआ करता है।"
- **रूथ बेनीडिक्ट** के मतानुसार, "माता-पिता से सन्तान में हस्तान्तरित होने वाले लक्षणों को आनुवांशिकता कहते हैं।"
- **डगलस और हालैण्ड** के शब्दों में, "एक व्यक्ति की आनुवंशिकता में वे संरचनाएँ, शारीरिक विशेषताएँ, क्रियाएँ अथवा क्षमताएँ सम्मिलित की जाती हैं जिन्हें वह अपने माता-पिता, अन्य पूर्वजों अथवा जातियों से प्राप्त करता है।"
- **जे.ए. थाम्पसन** के अनुसार, "वंशानुक्रम क्रमबद्ध पीढ़ियों के बीच उत्पत्ति सम्बन्धी सम्बन्ध के लिए सुविधाजनक शब्द है।"
- **बी.एन. झा** के अनुसार, "आनुवांशिकी व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है।"
- **एक अन्य मनोवैज्ञानिक के अनुसार**, "आनुवांशिकी के अंतर्गत वे समस्त शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विशिष्टताएँ आ जाती हैं जो एक व्यक्ति अपने माता-पिता से प्राप्त करता है। ये विशिष्टताएँ पैतृक (जीन) के द्वारा हमें हस्तांतरित होती है।"
- **वुडवर्थ** तथा **मार्किस** के अनुसार, "शिशु की आनुवांशिकता माता-पिता दोनों पर आधारित होती है। निषेचन या गर्भाधान के समय ही उसका स्वरूप निश्चित और स्थिर हो जाता है। बाद में कोई अतिरिक्त आनुवांशिकता का उनमें प्रवेश नहीं हो सकता, यहाँ तक कि माता-पिता से भी नहीं, जो उसे नौ महीने तक गर्भ में पालती है।"
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, "माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का संतानों में संक्रमित होना ही वंशानुक्रम है।"
- **वुडवर्थ** के अनुसार, "वंशानुक्रम में वे सभी बातें आ जाती है जो जीवन का आरम्भ करते समय व्यक्ति में उपस्थित थी। ये जन्म के समय नहीं अपितु गर्भाधान के समय जन्म से लगभग नौ माह पूर्व व्यक्ति में पैदा होती है।"
- **डगलस व हॉलैंड** के अनुसार, "माता-पिता या पूर्वज या प्रजाति से प्राप्त समस्त शारीरिक रचनाएँ, विशेषताएँ, क्रियाएँ अथवा क्षमताएँ व्यक्ति के वंशानुक्रम में सम्मिलित रहती है।"
- **एच.ए. पीटरसन** के अनुसार, "व्यक्ति अपने माता-पिता के माध्यम से पूर्वजों के जो कुछ गुण प्राप्त करता है, वही वंशानुक्रम कहलाता है।"
- **मनोविज्ञान के क्षेत्र में वंशानुक्रम से सम्बन्धित अध्ययनों का आरम्भ गाल्टन** ने किया।
- वंशानुक्रम या आनुवंशिकता के द्वारा प्राणी में अनेक प्रकार के **जन्मजात गुण या विशेषताएँ तथा योग्यताएँ** आ जाती है।
- वंशानुक्रम से सम्बन्धित सभी प्रकार की विशेषताएँ तथा योग्यताएँ व्यक्ति में जीवन प्रारम्भ होने के समय या **गर्भाधान के समय** ही आ जाती है।
- व्यक्ति या प्राणी के विकास में वंशानुक्रम का बहुत अधिक महत्त्व होता है तथा वातावरण या पर्यावरण के प्रभाव के द्वारा जन्मजात विशेषताओं

खण्ड - II

5 व्यक्तिगत विभिन्नताएँ [Individual Differences]

अर्थ एवं प्रकार, व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारक [Meaning and Types Factors Affecting Individual Differences]

❖ सर्वप्रथम **फ्राँसिस गॉल्टन** ने 1869 में अपनी पुस्तक **''हेरीडिटरी जीनियस''** में व्यक्तिगत विभिन्नताओं का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन प्रस्तुत किया।

❖ बिने, पियर्सन, कैटल, टर्मन इत्यादि मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तिगत विभिन्नताओं का प्रमुख रूप से अध्ययन किया।

❖ वैयक्तिक विभिन्नताओं को व्यक्तिगत विभिन्नताएँ, व्यक्तिगत विभेद तथा वैयक्तिक विभेद इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।

❖ वैयक्तिक विभिन्नताओं से तात्पर्य रंग रूप, शारीरिक गठन, बुद्धि, अभिरुचि, स्वभाव, व्यक्तित्व, आदत, शीलगुणों एवं अन्य व्यवहारगत विशेषताओं में एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से भिन्न या अलग होने से है।

❖ **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''कोई व्यक्ति अपने समूह के शारीरिक तथा मानसिक गुणों के औसत से जितनी भिन्नता रखता है उसे व्यक्तिगत भिन्नता कहते हैं।''

❖ **टायलर** के अनुसार शरीर के रूप, रंग, आकार, कार्यगति, बुद्धि, ज्ञान, उपलब्धि, रुचि, अभिरुचि इत्यादि लक्षणों में पायी जाने वाली भिन्नता को व्यक्तिगत विभिन्नता कहते हैं।

❖ **रैबर** के अनुसार, ''वैयक्तिक विभिन्नता नाम एक ऐसी मनोवैज्ञानिक घटनाओं के लिए दिया जाता है जो उन विशेषताओं व शीलगुणों पर बल डालती है जिनके अनुसार वैयक्तिक जीवन भिन्न होते हुए दिखाये जा सकते हैं।

❖ **स्कीनर** के अनुसार, ''व्यक्तिगत विभिन्नताओ से हमारा तात्पर्य व्यक्तित्व के उन सभी पहलुओं से है जिनका मापन एवं मूल्यांकन किया जा सकता है।''

❖ **भाटिया** के अनुसार, **''व्यक्ति में अन्तर लक्षणों में अन्तर होता है।''**

❖ **कार्टर बी. गुड** द्वारा रचित 'डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन' में वैयक्तिक विभिन्नता पर निम्नलिखित रूप से प्रकाश डाला गया है—

(i) व्यक्तियों में किसी एक विशेषता या अनेक विशेषताओं को लेकर पाए जाने वाला अंतर वैयक्तिक विभिन्नता है।

(ii) अपने सम्पूर्ण रूप से वो सारे भेद और अंतर जो एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करते हैं, वैयक्तिक विभिन्नता है।

वैयक्तिक भिन्नता का वर्गीकरण

❖ वैयक्तिक विभिन्नताओं को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है। इसके ज्ञान द्वारा भी वैयक्तिक विभिन्नता का स्वरूप स्पष्ट होता है।

(1) शारीरिक विभिन्नता—इसके अंतर्गत शरीर की लम्बाई, मोटाई, भार, विकास की गति, क्रियाशीलता तथा गतिशीलता में अन्तर आते हैं।

(2) मानसिक विभिन्नता—मानसिक विभिन्नता के अंतर्गत मानसिक योग्यताओं, मानसिक प्रक्रियाओं—सीखने, स्मरण करने, कल्पना करने, विचार करने तर्क करने में अन्तर, बुद्धि में अंतर, भाषा-योग्यता में अंतर, विशेष विषयों की योग्यताओं तथा रुचियों एवं झुकावों में अंतर सम्मिलित हैं।

(3) संवेगात्मक विभिन्नता—इसका सम्बन्ध संवेगों, मूल प्रवृत्तियों, अनुकरण, सहानुभूति, संकेत, खेल आदि जैसी सामान्य प्रवृत्तियों से होता है। प्रत्येक व्यक्ति में संवेगात्मक अंतर भी पाया जाता हैं।

(4) व्यक्तित्व विभिन्नता—प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व भी अलग-अलग होता है—कोई बर्हिमुखी होता है तो कोई अन्तर्मुखी।

(5) लैंगिक विभिन्नता के कारण भेद—लड़के तथा लड़कियों की जैविक तथा शारीरिक बनावट में अन्तर होता है। लड़के कठोर कार्य के लिए उपयुक्त होते हैं और लड़कियाँ कोमल कार्यों के लिए।

❖ सीखने के बहुत से क्षेत्रों में लड़के और लड़कियों की क्षमताओं में विभिन्नता प्रदर्शित होती है।

(6) रुचियों में विभिन्नता—प्रत्येक व्यक्ति की रुचियों में अन्तर पाया जाता है। कोई संगीत में रुचि रखता है तो कोई चित्रकारी में। लड़के तथा लड़कियों में भी अन्तर पाया जाता है।

(7) ज्ञानोपार्जन में विभिन्नता—प्रत्येक बालक की ज्ञानोपार्जन की क्षमता अलग-अलग होती है। कोई बालक विषय को शीघ्र ग्रहण कर लेता है तो कोई देर से। इस दिशा में बालक और बालिकाओं की क्षमताओं में अन्तर पाया जाता है।

(8) अभिवृत्तियों में भिन्नता—अभिवृत्तियों की दृष्टि से व्यक्ति-व्यक्ति में अन्तर पाया जाता है। कोई धार्मिक अभिवृत्ति का होता है तो कोई अधार्मिक होता है।

(9) सामाजिक विभिन्नता—बालकों के सामाजिक विकास में भी वैयक्तिक अन्तर दृष्टिगोचर होता है। कुछ बच्चे अत्यधिक मिलनसार होते हैं और कुछ दब्बू तथा डरपोक होते हैं, कुछ के अंदर सामाजिक योग्यता का भी अभाव होता है।

(10) जाति या राष्ट्र सम्बन्धी विभिन्नता—प्रत्येक जाति अथवा राष्ट्रगत की सामान्य विशेषताएँ होती हैं। इन विशेषताओं के आधार पर उनके सदस्यों को दूसरी जाति अथवा राष्ट्र के सदस्यों से अलग किया जा सकता है।

❖ **टायलर** का कथन है, ''शरीर के आकार और स्वरूप, शारीरिक कार्यों, गति सम्बन्धी क्षमताओं, बुद्धि, उपलब्धि, ज्ञान, रुचियों, अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व के लक्षणों में माप की जा सकने वाली विभिन्नताओं की उपस्थिति सिद्ध की जा चुकी है।''

वैयक्तिक भिन्नता के कारण

❖ मनोवैज्ञानिक अन्वेषणों और अध्ययनों के आधार पर वैयक्तिक भिन्नता के कई कारण मिलते हैं।

6 व्यक्तित्व की संकल्पना, प्रकार एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक, मापन
[Concept of Personality, Types & Factors Affecting Personality, Measurement]

व्यक्तित्व : अर्थ एवं परिभाषाएँ

- व्यक्तित्व अंग्रेजी शब्द **'पर्सनलटी'** (Personality) का हिंदी रूपांतरण है एवं पर्सनलटी शब्द लैटिन भाषा के शब्द **पर्सोना** (Persona) से बना है जिसका अर्थ **मुखौटा/नकाब** (Mask) होता है, जिसे नायक/अभिनेता नाटक करते समय पहनते हैं।
- इस प्रकार शाब्दिक दृष्टि से व्यक्तित्व का अर्थ बाहरी वेशभूषा तथा दिखावे से है, लेकिन शाब्दिक दृष्टि से व्यक्तित्व की सम्पूर्ण व्याख्या नहीं होती है।
- वर्तमान समय में व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति के बाह्य व्यक्तित्व एवं आंतरिक व्यक्तित्व दोनों को सम्मिलित किया जाता है।
- व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति के बाह्य दिखावे अर्थात शारीरिक गठन एवं आंतरिक गुणों एवं योग्यताओं को सम्मिलित किया जाता है।
- मनोवैज्ञानिक शब्दों में व्यक्तित्व से तात्पर्य उन विशिष्ट तरीकों से है जिनके माध्यम से व्यक्ति अन्य व्यक्तियों और स्थितियों के प्रति अनुक्रिया करता है।
- व्यक्तित्व के अध्ययन की सहायता से लोग सरलता से इस बात का वर्णन कर सकते हैं कि व्यक्ति किस तरह से विभिन्न स्थितियों के प्रति अनुक्रिया करते हैं।
- कुछ शब्द जैसे—शर्मीला, संवेदनशील, शांत, गंभीर, स्फूर्तिवान इत्यादि का प्रयोग सामान्यत: व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए किया जाता है।
- ये शब्द व्यक्तित्व के विभिन्न घटकों को इंगित करते हैं, इस अर्थ में व्यक्तित्व से तात्पर्य उन अनन्य एवं सापेक्षित रूप से स्थिर गुणों से है जो एक समयावधि में विभिन्न स्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार को विशिष्टता प्रदान करते हैं।
- **आइजेंक** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्त-प्रकृति, ज्ञान-शक्ति तथा शरीर गठन का करीब-करीब एक स्थाई एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।''
- **ऑलपोर्ट** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।''
- **आर.बी. कैटल** के अनुसार, ''व्यक्तित्व वह है जिसके द्वारा हम यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति किस परिस्थिति में क्या करेगा?''
- **वॉटसन** के अनुसार, ''विश्वसनीय सूचना प्राप्त करने के दृष्टिकोण से काफी लंबे समय तक वास्तविक निरीक्षण या अवलोकन करने के पश्चात् व्यक्ति में जो भी क्रियाएँ अथवा व्यवहार का जो भी रूप पाया जाता है उसे उसका व्यक्तित्व कहा जाता है।''
- **चाइल्ड** के अनुसार, ''व्यक्तित्व से तात्पर्य स्थायी आंतरिक कारकों से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार को एक समय से दूसरे समय में संगत बनाता है तथा तुल्य परिस्थितियों में अन्य लोगों के व्यवहार से अलग करता है।''
- **वुडवर्थ** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की एक समग्र विशेषता है।''
- **गिलफोर्ड** के अनुसार, ''व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।''
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के उस एकीकृत तथा गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है जिसे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान-प्रदान में व्यक्त करता है।''
- **बिग** तथा **हंट** के अनुसार ''व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार प्रतिमान तथा इसकी समस्त विशेषताओं के योग को व्यक्त करता है।''

नोट—
- **स्वभाव**—जैविक रूप से आधारित प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट तरीका।
- **विशेषक या शीलगुण**—व्यवहार करने का स्थिर, सतत एवं विशिष्ट तरीका।
- **स्ववृत्ति**—किसी स्थिति विशेष में विशिष्ट तरीके से प्रतिक्रिया करने की व्यक्ति की प्रवृत्ति।
- **चरित्र**—नियमित रूप से घटित होने वाले व्यवहार का समग्र प्रतिरूप।
- **मूल्य**—लक्ष्य और आदर्श जो महत्वपूर्ण और उपलब्धि के योग्य माने जाते हैं।
- **आदत**—व्यवहार करने का अत्यधिगत ढंग।

व्यक्तित्व की विशेषताएँ

- व्यक्तित्व के संप्रत्यय के अंतर्गत निम्नलिखित विशेषताओं को सम्मिलित किया जाता है—
  - व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, भाषायी, नैतिक तथा चारित्रिक गुणों को एवं अन्य कौशलों को समग्र रूप से सम्मिलित किया जाता है।
  - व्यक्तित्व एक गत्यात्मक संगठन है, गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व के शीलगुण या अन्य तत्त्व आपस में इस तरह से संगठित होते हैं कि उनमें परिवर्तन भी होते रहते हैं।
  - व्यक्तित्व में संगतता (Consistency) पायी जाती है अर्थात् व्यक्तित्व में व्यक्ति का व्यवहार एक समय से दूसरे समय में संगत होता है।
  - व्यक्तित्व वातावरण में व्यक्ति के अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है, जैसे-प्रत्येक व्यक्ति में मनोशारीरिक गुणों का एक ऐसा

7 बुद्धि [Intelligence]

संकल्पना, सिद्धान्त एवं इसका मापन, बहुबुद्धि सिद्धान्त एवं इसके निहितार्थ
[Concept, Theory & It's Measurement, Multiple Intelligence & It's Implications]

- बुद्धि की मानव विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मानव विकास के विभिन्न पहलुओं जैसे-मानसिक विकास, शारीरिक विकास, संवेगात्मक विकास, भाषायी विकास, सामाजिक विकास, नैतिक विकास तथा अन्य सम्बन्धित सभी पहलू बुद्धि के द्वारा महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित होते हैं।
- बुद्धि किसी केंद्रीय तत्त्व या एक तत्त्व का योग न होकर अनेक तत्त्वों का और अनेक क्षमताओं का एक समग्र एवं एकीकृत रूप है।
- सर्वप्रथम **बोरिंग** ने बुद्धि की एक औपचारिक परिभाषा प्रस्तुत की और कहा कि ''बुद्धि परीक्षण जो मापता है वही बुद्धि है।''
- **वेश्लर (Wechsler)** के अनुसार, ''बुद्धि एक समुच्चय या सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है, विवेकशील चिंतन करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करता है।''
- **रॉबिंसन तथा रॉबिंसन** के अनुसार, ''बुद्धि से तात्पर्य संज्ञानात्मक व्यवहारों के सम्पूर्ण वर्ग से होता है जो व्यक्ति में सूझ (Insight) द्वारा समस्या समाधान करने की क्षमता, नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता, अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता तथा अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता को दिखाती है।''
- **निसेर** तथा उनके सहयोगियों के अनुसार, ''बुद्धि व्यक्ति के जटिल विचारों को समझने, पर्यावरण के साथ प्रभावी ढंग से समायोजन करने, अनुभवों से सीखने, विभिन्न तरह के तर्कना (Reasoning) में सम्मिलित होने और चिंतन द्वारा बाधाओं को दूर करने की क्षमता होती है।''
- **वुडवर्थ और मार्क्विस** के अनुसार ''बुद्धि का अर्थ प्रतिभा का प्रयोग करना, किसी स्थिति का सामना करने या किसी कार्य को करने के लिए प्रतिभात्मक योग्यताओं के प्रयोग से है।''
- **वुडरो** के अनुसार, ''बुद्धि व्यक्ति की वह सामान्य योग्यता है जिसके द्वारा वह सचेत रूप से नवीन आवश्कताओं के अनुसार चिंतन करता है तथा जीवन की नई समस्याओं एवं स्थितियों के अनुसार अपने आप को ढालता है।''
- **टर्मन** के अनुसार, ''व्यक्ति जिस अनुपात में अमूर्त चिंतन (Abstract Thinking) करता है उसी अनुपात में वह बुद्धिमान कहलाता है।''
- **बिने** के अनुसार, ''बुद्धि इन चार शब्दों में निहित है ''ज्ञान, आविष्कार, निर्देश एवं आलोचना।''

- **गाल्टन** के अनुसार, ''बुद्धि पहचानने तथा सीखने की शक्ति है।''
- **प्रिंटर** के अनुसार, ''बुद्धि का विकास जन्म से लेकर किशोरावस्था के मध्यकाल तक होता है।
- **स्टॉर्ड** के अनुसार, ''बुद्धि उन क्रियाओं को समझने की योग्यता है जिनमें कठिनता, जटिलता, मितव्ययिता, सामाजिक मूल्य, अमूर्तता, लक्ष्य के प्रति अनुकूलनशीलता एवं मौलिकता की विशेषताएँ निहित होती हैं, और कुछ वैसी परिस्थितियों में वैसी क्रियाओं को जो शक्ति की एकाग्रता एवं सांवेगिक कारकों के प्रति प्रतिरोध प्रदर्शित करने की प्रेरणादायी शक्ति है।''

खण्ड - III

8 विविध अधिगमकर्ताओं की समझ [Understanding Various Learners]

पिछड़े, विमंदित, प्रतिभाशाली, सृजनशील, अलाभान्वित-वंचित, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे एवं अधिगम अक्षमतायुक्त बच्चे

[Backward, Mentally Retarded, Gifted, Creative, Disadvantaged Deprived, CWSN Children]

अर्थ एवं परिभाषाएँ

- विशेष आवश्यकता वाले बालकों को विशिष्ट बालक (Exceptional Children) तथा विविध अधिगमकर्त्ता (Diverse Learner) इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।
- विशिष्ट बालक या विशेष आवश्यकता वाले बालक उन बालकों को कहा जाता है जो योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों, कार्यों, व्यवहार तथा व्यक्तित्व सम्बन्धित विशिष्टताओं की दृष्टि से अपनी आयु के औसत या अन्य बालकों से बहुत अधिक भिन्न होते हैं।
- इस प्रकार के बालक अपनी आयु तथा आयु समूह के सामान्य बच्चों से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास की दृष्टि से इतने पिछड़े हुए या इतने अधिक आगे निकले होते हैं कि उन्हें जीवन में प्रत्येक कदम पर या अधिकतर मामलों में, बाधाओं तथा समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- इन बालकों को अपनी शक्तियों का समुचित उपयोग करने तथा अद्वितीय ढंग से अपने आप को समायोजित करने के लिए विशेष देखभाल और शिक्षा-दीक्षा की आवश्यकता होती है।
- **क्रो एवं क्रो** ने विशिष्ट (Exceptional) शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखा कि ''विशिष्ट शब्द या विशिष्ट प्रकार किसी एक ऐसे गुण या उस गुण को धारण करने वाले व्यक्ति के लिए उस समय प्रयोग में लाया जाता है जब व्यक्ति उस गुण विशेष को धारण करते हुए अन्य व्यक्तियों से इतना अधिक असामान्य प्रतीत हो कि वह उस गुण विशेष के कारण अपने साथियों से विशिष्ट ध्यान की माँग करे अथवा उसे प्राप्त करे और साथ ही इससे उसके व्यवहार की क्रियाएँ तथा अनुक्रियाएँ भी प्रभावित हों।''
- **क्रिक** के अनुसार, ''कोई विशिष्ट बालक वह है जो सामान्य अथवा औसत बालक से मानसिक, शारीरिक तथा सामाजिक विशेषताओं में इतना अधिक भिन्न है कि वह विद्यालय व्यवस्थाओं में संशोधन अथवा विशेष शैक्षिक सेवाएँ अथवा पूरक शिक्षण चाहता है जिससे वह अपनी अधिगम क्षमता का विकास कर सके।''
- **हेवार्ड एवं ऑरलैंस्की** ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'एक्सेप्शनल चिल्ड्रन' (Exceptional Children) में विशिष्ट बालकों को परिभाषित किया है, ''विशिष्ट एक ऐसा समावेशी पद है जिसका तात्पर्य किसी भी ऐसे बालक से होता है जिसका निष्पादन मानक से ऊपर या नीचे इस हद तक विचलित होता है कि उसके लिए विशेष शिक्षा के कार्यक्रम की जरूरत होती है।''
- **डन** के अनुसार, ''विशिष्ट बालक वे बालक है जो सामान्य से शारीरिक अथवा मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में इतने भिन्न है कि बहुसंख्यक बालकों के लिए बनाया गया विद्यालय कार्यक्रम उनको अनुकूलतम विकास के अवसर उपलब्ध नहीं करा पाता है इसलिए अपनी योग्यताओं के अनुरूप उपलब्धि प्राप्त कर सकने के लिए उन्हें विशेष शिक्षण अथवा कुछ स्थितियों में सहायक सेवाएँ दोनों की जरूरत होती है।''
- **टैलफोर्ड** एवं **सॉरे** के अनुसार, ''विशिष्ट बालक शब्दावली का प्रयोग उन बालकों के लिए करते हैं जो सामान्य बालकों से शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक या सामाजिक विशेषताओं में इतने भिन्न होते हैं कि उन्हें अपने अधिकतम विकास हेतु विशेष सामाजिक और शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है।''
- **क्रुक शैंक** के अनुसार ''विशिष्ट बालक वह है जो बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक अथवा संवेगात्मक दृष्टि से सामान्य समझे जाने वाले वृद्धि तथा विकास से इतना भिन्न है कि वह नियमित विद्यालय कार्यक्रम से अधिकतम से अधिकतम लाभ नहीं उठा सकता है तथा विशिष्ट कक्षा अथवा पूरक शिक्षण व सेवाएँ चाहता है।''

विशेष आवश्यकता वाले बालकों/विशिष्ट बालकों की विशेषताएँ

- उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते हैं कि विशिष्ट बालकों में निम्नलिखित विशेषताएँ निहित होती हैं—
- विशिष्ट बालक सामान्य या औसत बालकों से काफी अधिक अलग और भिन्न होते हैं।
- सामान्य या औसत बालकों से विशिष्ट बालकों की यह भिन्नता विकास की दोनों दिशाओं धनात्मक या ऋणात्मक में से किसी भी एक में हो सकती है।
- उदाहरण के लिए कोई बालक बुद्धि की दृष्टि से अत्यधिक उच्च क्षमता वाला हो सकता है जिसे प्रतिभाशाली बालक की श्रेणी में रखते हैं। वहीं कोई बालक बुद्धि की कमी से अथवा औसत से अत्यधिक कम बुद्धि वाला भी हो सकता है, जिन्हें मानसिक रूप से पिछड़े बालकों/मंद बुद्धि बालकों में शामिल किया जाता है।
- बालकों के इन दोनों ही प्रकार को विशिष्ट बालकों के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है।
- विशिष्ट बालकों की यह भिन्नता या दूरी इस सीमा तक बढ़ी हुई होती है कि उन्हें अपने वातावरण में समायोजित होने में विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ता है और अपनी विशेष योग्यताओं और क्षमताओं के विकास, उचित समायोजन तथा आवश्यक वृद्धि एवं विकास हेतु विशेष देखरेख एवं शिक्षा-दीक्षा की आवश्यकता पड़ती है।
- किसी बालक के विशिष्ट बालक होने के कई आधार हैं तथा इन सभी आधारों को उच्चतम तथा निम्नतम पैमाने के आधार पर बाँटा गया है।
- विशिष्ट बालकों की श्रेणी के लिए आधार बौद्धिक भी हो सकते हैं, शैक्षिक भी हो सकते हैं, शारीरिक भी हो सकते हैं, संवेगात्मक भी हो सकते हैं तथा सामाजिक भी हो सकते हैं, अत: विशिष्टता के अनेक आधार हैं।

9 अधिगम में आने वाली कठिनाईयाँ [Learning Difficulties]

अधिगम की निर्योग्यताएँ/अयोग्यताएँ

- ऐसे अनेक बालक हैं जिन्हें बात करना देर से सीख पाते हैं या बात करने में पिछड़े होते हैं। कुछ छात्रों को वाचन, वर्तनी, लेखन या गणित की समस्याओं में गणना करना सीखने में अत्यधिक कठिनाई होती है।
- **अधिगम अयोग्यता से आशय वाणी, भाषा, वाचन, वर्तनी, लेखन या गणित की एक या अधिक प्रक्रियाओं में पिछड़ापन, व्यतिक्रम या विलम्बित विकास से है।**
- यह मस्तिष्क के कार्य न करने या सांवेगिक या व्यवहारात्मक बाधा का परिणाम है न कि मानसिक पिछड़ेपन, ज्ञानेन्द्रियों की कमी या सांस्कृतिक और शिक्षण सम्बन्धी कारकों का।
- शिक्षा में एक बालक वाचन सीखने की बौद्धिक क्षमता रखता है। लेकिन पर्याप्त शिक्षण के बाद भी सीख नहीं पाता है तो इसे **'वाचन अयोग्यता'** में वर्गीकृत किया जाता है।
- ऐसे ही वर्गीकरण **वर्तनी अयोग्यता, लेखन अयोग्यता तथा गणित अयोग्यता** के रूप में किये जाते हैं।
- चिकित्सा साहित्य के लिए भिन्न शब्दावली उपयोग की जाती है।

अधिगम विकृतियों के प्रकार (Types of learning disorders)

1 गणित संबंधी समस्याएँ/ विकृतियाँ	2 पठन विकृतियाँ (Reading disorder)	3 लेखन विकृतियाँ (Writing disorder)	4 मौखिक रूप से बोलने या सीखने की अक्षमता
(I) लैक्सिकल डिस्कैल्कुलिया (ii) ग्राफिकल डिस्कैल्कुलिया (iii) वर्बल डिस्कैल्कुलिया	(i) एलेक्सिया (ii) डिस्लैक्सिया	(i) डिस्प्रैक्सिया (ii) डिस्ग्राफिया (iii) अप्रेक्सिया (iv) अग्रेफिया	(i) अफेज्या (ii) डिस्फेज्या

- अधिगम की अयोग्यताओं के प्रमुख प्रकार निम्न प्रकार हैं—

वाचाघात (Aphasia)

- एफासिया का प्रयोग विस्तृत अर्थ में सिरेब्रेल अकार्यता से उत्पन्न **वाचन, लेखन, बोलने तथा बोले या लिखित शब्दों का अर्थ निकालने में अयोग्यता** के लिए होता है।
- **वाचाघात (Aphasia)** मस्तिष्क की ऐसी विकृति है जिसमें व्यक्ति के बोलने, लिखने तथा बोले एवं लिखित शब्दों को समझाने या प्रकट करने में अनियमितता, अस्पष्टता आदि स्थायी विकार उत्पन्न हो जाता है।

वाचाघात के कारण

- वाचाघात के मुख्य कारण मस्तिष्क का **आम्बोसिस, रक्त स्रोत शोधन** (Embolism), **अर्बुद (Tumour), फोड़े (Abscess)** इत्यादि माने जाते हैं, जो यदि मस्तिष्क के दाहिने भाग में हो तो शरीर का बायां भाग और यदि मस्तिष्क के बाएं भाग में हो, तो शरीर का दाहिना भाग आक्रांत होता है।
- सिल्वियन धमनी का आम्बोसिस रक्त स्रोत रोधन रोगोत्पत्ति में अधिक सहायक होता है।
- **अर्बुदजन्य वाचाघात** एकाएक उत्पन्न होता है। धीरे-धीरे **वाचाघात की उत्पत्ति मिर्गी, अधकपारी, रक्तमूल विषाक्तता, उन्मादी** का व्यापक पक्षाघात को उपदंश की चतुर्थ अवस्था में गंभीर स्वरूप होता है तथा मस्तिष्क शोध, तंद्रा इत्यादि कारणों से होती है।

वाचाघात के प्रकार

लक्षणों के आधार पर वाचाघात का वर्गीकरण निम्न प्रकार है—

(A) गामक एफेसिया (Motor Aphasia)—गामक एफासिया से तात्पर्य **बोलने या दूसरे के साथ विचार-विमर्श की योग्यता की क्षति** से है। **प्रेरक वाचाघात** (Aphasia Motor) में रोगी केवल स्पष्ट रूप से बोल नहीं सकता। परन्तु इसमें बोलते समय प्रयुक्त होने वाली मांसपेशियों में किसी प्रकार का विकार नहीं होता।

- इस अवस्था में रोगी केवल छोटे-छोटे शब्दों का ही सही उच्चारण कर सकता है।

(B) ज्ञानात्मक एफासिया (Sensory Aphasia)—ज्ञानात्मक एफासिया बोले गये **शब्दों, संकेतों या छपी हुई सामग्री को समझने की शक्ति की क्षति है।**

- **ट्रांसस्कोर्टिकल सेन्सरी एफासिया (TSA) वाचाघात (एफासिया)** का एक प्रकार है जो मस्तिष्क के टेम्पोरल लोबस के विशिष्ट क्षेत्र की हानि होने से उत्पन्न होता है।
- इसके तहत जैसे फेराफासिया के साथ कमजोर श्रवण, बूझ, अपेक्षाकृत बरकरार पुरावृत्ति और धारा प्रवाह भाषण (बोलने) आदि की क्षति शामिल हैं।

10 समायोजन की संकल्पना एवं तरीके, समायोजन में अध्यापक की भूमिका [Concept & Methods of Adjustment, Role of Teacher in Adjustment]

- समायोजन को **सामंजस्य या अनुकूलन** भी कहते हैं। समायोजन दो शब्दों—**सम् और आयोजन** से मिलकर बना है। सम् का अर्थ है – अच्छी तरह या समान रूप से या भली-भाँति और आयोजन का अर्थ है – **व्यवस्था।**
- अतः समायोजन का अर्थ हुआ-सुव्यवस्था या अच्छी तरह से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाए और सामाजिक दायित्व का भी निर्वाहन हो जाए।
- जीवन में समायोजन की महत्ता स्वयं प्रमाणित है। कुछ बालक अपने जीवन में बड़ी ही आसानी से समायोजन कर लेते हैं, जबकि बहुत से बालकों को समायोजन करने में बहुत-सी कठिनाइयाँ आती हैं।
- यदि कोई बच्चा अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता है तो धीरे-धीरे वह आने वाली स्थितियों से समझौता कर लेता है। इसी समझौते की प्रक्रिया को ही मनोविज्ञान की भाषा में समायोजन कहते हैं।
- अर्थात् यह भी कहा जा सकता है कि जब कोई बालक या व्यक्ति अपने व्यवहार की गतिशीलता का प्रयोग आवश्यकताओं की पूर्ति और आत्म-पुष्टि के लिए करता है, तो इसे समायोजन की प्रक्रिया कहा जाता है।

समायोजन की परिभाषाएँ

- **आइजनेक एवं साथियों** के अनुसार, "समायोजन वह अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकताएँ तथा दूसरी ओर वातावरण के अधिकारों में पूर्ण सन्तुष्टि होती है अथवा समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा इन दो अवस्थाओं में सामंजस्य प्राप्त होता है।"
- **कोलमैन** के अनुसार, "समायोजन अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा खिंचावों से निपटने के लिए व्यक्ति द्वारा किए गए प्रयासों का परिणाम है।"
- **बोरिंग, लेंगफील्ड व वेल्ड** के अनुसार, "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।"
- **शेफर** के अनुसार, "समायोजन एक प्रक्रिया है जिसमें प्राणी अपनी आवश्यकताओं व परिस्थितियों और उन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि को प्रभावित करता है।"
- **डॉ. एस.एस. चौहान** के अनुसार, "समायोजन का अर्थ एक आरोपित सामाजिक पर्यावरण की अपेक्षाओं एवं दबावों के प्रति उसकी अनुक्रिया है। यह अपेक्षा आन्तरिक अथवा बाह्य होती है जिसके प्रति व्यक्ति अनुक्रिया करता है।"
- इस विचारों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि **समायोजन वह स्थिति या दशा है जहाँ व्यक्ति का व्यवहार समाज अथवा संस्कृति सम्मत हो और साथ-साथ उसकी स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला हो।**

अच्छे समायोजन की विशेषताएँ

1. समायोजित व्यक्ति संतुलन बनाए रखता है।
2. परिस्थिति का ज्ञान, नियंत्रण व अनुकूल आचरण करता है।
3. पर्यावरण तथा परिस्थिति से लाभ उठाता है।
4. वह हमेशा संतुष्ट और सुखी रहता है।
5. समाज के अन्य व्यक्तियों का ध्यान रखता है।
6. समस्या का समाधान करने वाला और साहसी होता है।
7. सामाजिक व्यक्तित्व और आदर्श चरित्र वाले होते हैं।
8. दायित्वपूर्ण और संवेगात्मक रूप से स्थिर होते हैं।
9. बदलती परिस्थितियों के साथ अनुकूलन बनाए रखता है।
10. समायोजित व्यक्ति सामाजिक रूप से जागरूक होता है।
11. भावात्मक अस्थिरता, दबाव व तनाव में भी अपने कार्यों को उचित तरीके से करते हैं।
12. दूसरों में दोषों को ढूँढने की प्रवृत्ति नहीं होती है।
13. विपरीत परिस्थितियों को झेलने की क्षमता होती है।
14. समायोजित व्यक्ति अपने व्यवहार का निरन्तर मूल्यांकन व संशोधन करता है।
15. इनमें स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता होती है।
16. समायोजित व्यक्ति के चिन्तन में परिपक्वता होती है।
17. दूसरों के प्रति संवेदनशीलता होती है।
18. समायोजित व्यक्ति समाज विरोधी कार्यों में भाग नहीं लेता है।
18. आत्म-सम्मान के साथ-साथ दूसरों का सम्मान भी करता है।
20. दूसरों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाकर रखते हैं।
21. अपना उत्तरदायित्व सही प्रकार से निभाते हैं।
22. स्वयं पर नियंत्रण रखने की क्षमता होती है।
23. कुशल और उद्यमशील होते हैं।
24. इनका आकांक्षा स्तर ऊँचा होता है।
25. नए विचारों के प्रति खुलापन होता है।
26. संवेगों का उचित प्रदर्शन करते हैं।
27. किसी पर भी सहज विश्वास करने वाले होते हैं।
28. विचारों में सकारात्मकता व सृजनशीलता होती है।

समायोजन के प्रकार

- सामान्यतयाः समायोजन तीन प्रकार के होते हैं—

1. **रचनात्मक समायोजन**—रचनात्मक कार्यों के माध्यम से जब कोई व्यक्ति क्षेत्र विशेष में समायोजन करता है, रचनात्मक समायोजन कहलाता है।
   जैसे किसी व्यक्ति का समायोजन धार्मिक क्षेत्र में अव्यवस्थित हो जाता है तो समाज में उपकार करने के लिए कुछ रचनात्मक कार्य करके अपना समायोजन कर लेता है।

खण्ड - IV

11 अधिगम का अर्थ एवं संकल्पना, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक [Meaning & Concept of Learning, Factors Affecting Learning]

अधिगम : अर्थ एवं परिभाषाएँ

- जीवन सतत परिवर्तनशील एवं गतिमान है। एक नवजात शिशु कुछ स्वचालित सहज क्रियाओं के साथ पैदा होता है लेकिन वयस्क होते-होते वह कई जटिल व्यवहारों को करने में समर्थ हो जाता है, यह सीखने से ही संभव हो पाता है।
- सीखना या अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे व्यक्ति उचित तरीके से तथा पूर्ण मनोयोग से संपादित करें तो व्यक्ति वह बन सकता है जो वह बनना चाहता है।
- अधिगम की प्रक्रिया के कारण ही डॉ. होमी जहाँगीर भाभा, विक्रम साराभाई, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिक; महात्मा गाँधी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे राष्ट्रीय नेता; अभिनव बिंद्रा, नीरज चौपड़ा, सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ियों के महान व्यक्तित्व का निर्माण हुआ।
- सामान्य अर्थ में अधिगम व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है लेकिन सभी तरह से व्यवहार में हुए परिवर्तनों को सीखना नहीं कहा जाता है। व्यवहार में परिवर्तन थकान, परिपक्वता, दवा को खाने, बीमारी, अभिप्रेरणात्मक स्थिति में उतार-चढ़ाव आदि से भी होते हैं, परंतु ऐसे परिवर्तनों को अधिगम नहीं कहा जाता इसके साथ-साथ व्यवहार में होने वाले अस्थाई एवं क्षणिक परिवर्तनों को भी अधिगम में सम्मिलित नहीं किया जाता।
- मनोविज्ञान में अधिगम से तात्पर्य व्यवहार में होने वाले उन्हीं परिवर्तनों से हैं जो अभ्यास अनुभव एवं प्रशिक्षण के फलस्वरूप होते हैं।

  अत: उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते हैं कि—

  अभ्यास, अनुभव एवं प्रशिक्षण के फलस्वरूप व्यवहार में सापेक्ष एवं अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को अधिगम कहते हैं।
- **गिलफोर्ड** के अनुसार, ''सीखना व्यवहार के फलस्वरूप व्यवहार में कोई भी परिवर्तन है।''
- **गेट्स** एवं अन्य के अनुसार, ''अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन को सीखना कहते हैं।''
- **सारटेन, नॉर्थ, स्ट्रेंज** तथा **चैपमैन** के अनुसार, ''सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभूति या अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन होता है।''
- **गार्डनर मरफी** के अनुसार, ''सीखना या अधिगम शब्द में वातावरण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवहार में होने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित है।''
- **वुडवर्थ** के अनुसार, ''किसी भी ऐसी क्रिया को जो व्यक्ति के विकास में सहायक होती है, उसे सीखने की संज्ञा दी जा सकती है।''
- **किंगस्ले** एवं **गैरी** के अनुसार, ''अभ्यास अथवा प्रशिक्षण के फलस्वरूप नवीन तरीके से व्यवहार करने अथवा व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया को सीखना कहते हैं।''
- **स्कीनर** के अनुसार, ''अधिगम व्यवहार में क्रमिक सामंजस्य की प्रक्रिया है।''
- **क्रो व क्रो** के अनुसार, ''सीखना आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।''
- **थॉर्नडाइक** के अनुसार, ''उपयुक्त अनुक्रिया के चयन तथा उसे उत्तेजना से जोड़ने को अधिगम कहते हैं।''
- **हिलगार्ड** के अनुसार, ''सीखना या अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई क्रिया आरंभ होती है अथवा परिस्थिति से सामना होने पर प्रक्रिया द्वारा परिवर्तित की जाती है बशर्ते क्रिया में होने वाले परिवर्तन की विशेषताओं को मूल प्रवृत्तियों, परिपक्वता या प्राणी की अस्थाई अवस्थाओं के आधार पर नहीं समझाया जा सके।''
- **मॉर्गन, किंग, विस्ज** तथा **स्कॉपलर** के अनुसार, ''अभ्यास या अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन को सीखना कहा जाता है।''
- **हरगेनहॉन** के अनुसार, ''सीखना व्यवहार या व्यवहारात्मक अंत: शक्ति में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन है जो अनुभव के कारण होता है एवं अस्थाई शारीरिक अवस्थाएँ जो बीमारी, थकान या औषधी लेने से होती है को इसके अंतर्गत नहीं रखा जाता।''
- **स्वॉर्ज** के अनुसार, ''हम लोग प्राय: व्यवहार में वैसे अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन को सीखना कहते हैं जो परिपक्वता, औषधी खाने के प्रभाव या शारीरिक अवस्थाओं से उत्पन्न नहीं होता है। सामान्य रूप से अनुभव तथा अभ्यास के कारण होने वाले व्यवहार में परिवर्तन को सीखना कहा जाता है।''
- **रिली** तथा **लेविस** के अनुसार, ''अभ्यास या अनुभव से व्यवहार में धारण योग्य परिवर्तन को सीखना कहा जाता है।''
- **कॉलविन** के अनुसार, ''पहले से निर्मित या मौलिक व्यवहार में अनुभव के कारण हुए परिवर्तन या सुधार को अधिगम कहा जाता है।''
- **पील** के अनुसार, ''अधिगम व्यक्ति में एक परिवर्तन है जो उसके वातावरण के परिवर्तनों के अनुकरण में होता है।''
- **क्रॉनबैक** के अनुसार ''सीखना, अनुभव के परिणाम स्वरूप व्यवहार में परिवर्तन द्वारा व्यक्त होता है।''

अधिगम की विशेषताएँ

- अधिगम प्रक्रिया की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—
- सीखने के द्वारा हमारे व्यवहार में जो परिवर्तन होते हैं वे पूरी तरह से अर्जित होते हैं, यह व्यवहार जन्मजात नहीं होते हैं तथा वंशक्रम के रूप में हमें विरासत में प्राप्त नहीं होते हैं।
- अधिगम व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन है।

13 बच्चे सीखते कैसे हैं, अधिगम की प्रक्रियाएँ, चिंतन, कल्पना एवं तर्क
[How Children Learn, Learning Processes, Reflection, Imagination and Argument]

बच्चों का सीखना

- जीन पियाजे (स्विट्जरलैण्ड) और वायगोत्सकी (रूस) ने सर्वप्रथम बालकों के सीखने के तरीकों का अध्ययन किया।
- **अनुभवों द्वारा**—अधिगम नवीन अनुभवों का अर्जन है। बालक नये अनुभवों को सीखता जाता है और उनको व्यवस्थित करता जाता है। सकारात्मक पुनर्बलन मिलनेपर वह इन अनुभवों को नवीन कार्यों में प्रयुक्त करता है।
- **वातावरण द्वारा**—अधिगम हमेशा वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में होता है। वातावरण स्वयं प्रेरक के रूप में कार्य करता है। बालक को जैसा वातावरण मिलता है, वह वैसी ही बातें सीख लेता है।
- **अभ्यास द्वारा**—बार-बार अभ्यास द्वारा बालक किन्हीं तथ्यों को सीख सकता है और लम्बे समय तक याद रख सकता है। थार्नडाइक के प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त के अनुसार बार-बार अभ्यास द्वारा ही अधिगम हो पाता है।
- **करके सीखना द्वारा**—बालक अपने स्वभाव के अनुरूप उद्देश्यपूर्ण या निरूद्देश्य क्रियाएँ करता रहता है। इसी के परिणामस्वरूप उसे कुछ नये ज्ञान की प्राप्ति होती है। बालक स्वयं करके सीखे गये तथ्यों को अधिक समय तक याद रख पाते हैं।
- **परिपक्वता द्वारा**— शारीरिक व मानसिक परिपक्वता पर अधिगम निर्भर करता है। कॉलसनिक के अनुसार, परिपक्वता एवं अधिगम एक-दूसरे से सम्बन्धित है और परस्पर निर्भर है। यदि बालक शारीरिक व मानसिक रूप से परिपक्व नहीं है, तो वह सीखने में कठिनाई अनुभव करेगा।
- **अभिरुचि द्वारा**—अधिगम के लिए रुचि अनिवार्य दशा है। बिना रुचि के बालक ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता है और बिना ध्यान केन्द्रित किए वह कुछ सीख नहीं पाता है। बालक हमेशा वही बात सीखता है, जिसमें उसकी रुचि होती है।
- **अभिप्रेरणा द्वारा**—स्किनर के अनुसार, अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोच्च राजमार्ग है। अभिप्रेरणा व्यक्ति की वह आंतरिक शक्ति है, जो उसे किसी विशेष परिस्थिति में अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए क्रियाशील बनाती है। इसी क्रियाशीलता के फलस्वरूप व्यक्ति नवीन अधिगम कर पाता है।
- **समस्या समाधान द्वारा**—व्यक्ति के समक्ष जब कोई समस्या उत्पन्न होती है तो वह उस समस्या के समाधान के लिए कई तरीके अपनाता है। इसी कड़ी में जो तरीका समस्या के समाधान में सफल हो जाता है, वही उसका नवीन अधिगम बन जाता है।
- **निरीक्षण द्वारा**—बालक किसी वस्तु या दृश्य का निरीक्षण करता है तो वह दृश्य उसकी स्मृति पटल पर स्थायी रूप से अंकित हो जाता है। उसे वह शीघ्र सीख लेता है। इसी कारण सीखने के लिए पर्यटन विधि अति उपयोगी विधि है।
- **प्रयोग द्वारा**—व्यक्ति प्रयोग करके नये तथ्यों की खोज करता है, जिनसे लोग पूर्व में परिचित नहीं होते हैं। स्वयं प्रयोग द्वारा खोजे गये तथ्यों को आसानी से सीखा जा सकता है और स्थायी रूप से स्मरण भी रखा जा सकता है।

अधिगम की प्रक्रिया

- अधिगम एक विस्तृत और व्यापक प्रक्रिया है। इसमें निरंतरता का गुण पाया जाता है तथा विभिन्न सोपानों/चरणों (Steps) से गुजर कर यह प्रक्रिया संपन्न होती है। अधिगम की प्रक्रिया (Process) मुख्यत: निम्नलिखित क्रमानुसार संपन्न होती है—

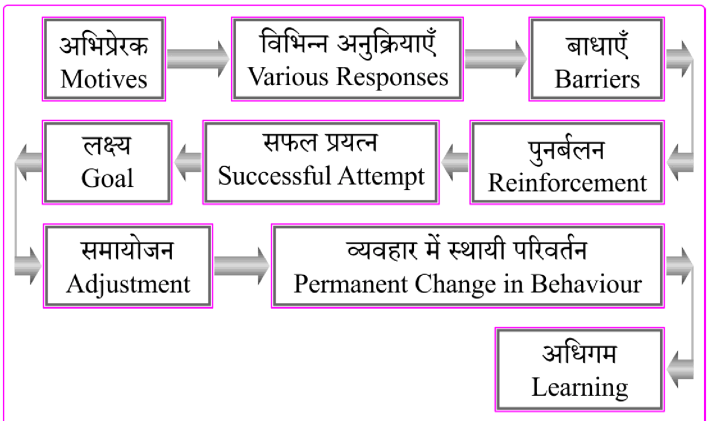

चित्र : अधिगम की प्रक्रिया (Learning Process)

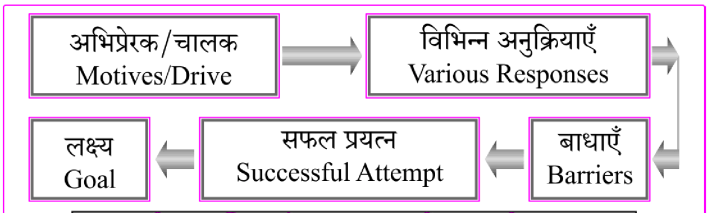

चित्र : स्मिथ के अनुसार अधिगम प्रक्रिया

- **मिलर** एवं **डोलार्ड** के अनुसार, शिक्षक अधिगम प्रक्रिया के चार सोपान निम्नलिखित हैं—
  - आवश्यकता का अनुभव होना
  - लक्ष्य को देखना
  - लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास
  - लक्ष्य की प्राप्ति
- **डिशैल** के अनुसार, अधिगम प्रक्रियाँ के पाँच सोपान निम्नलिखित हैं—
  - अभिप्रेरणा
  - विविध अनुक्रियाएँ
  - उद्देश्य प्राप्ति या पुनर्बलन
  - लक्ष्य की प्राप्ति में बाधाएँ
  - सही अनुक्रिया का चयन

16 आकलन, मापन, मूल्यांकन का अर्थ एवं उद्देश्य, समग्र एवं सतत मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण, सीखने के प्रतिफल [Meaning & Objectives of Assessment, Measurement & Evaluation : Comprehensive & Continuous Evaluation, Construction of Achievement Test, Learning Outcomes]

- **आकलन, मापन और मूल्यांकन** इन तीनों सम्प्रत्ययों द्वारा शिक्षण-अधिगम की सफलता-असफलता को ज्ञात किया जाता है।
- आकलन एक संकीर्ण सम्प्रत्यय है, जिससे अधिगम उद्देश्यों की सफलता-असफलता का मात्र अनुमान लगाया जाता है।
- आकलन या अनुमान की विश्वसनीयता प्रायः संदिग्ध रहती है।
- हम किसी विद्यालय के छात्रों के व्यवहार को देखकर एक आकलन कर सकते हैं कि उस विद्यालय में शिक्षण-अधिगम उद्देश्यों की सफलता-असफलता की स्थिति क्या है।
- मापन एक मध्यम प्रकार का सम्प्रत्यय है, जिससे छात्रों की परीक्षा लेकर उस समय छात्रों की बौद्धिक स्थिति का पता लगाया जाता है।
- मापन केवल अंक प्रदान करके संख्यात्मक व्याख्या करता है।
- मूल्यांकन एक विस्तृत सम्प्रत्यय है, जो छात्र की बौद्धिक स्थिति जानने के अलावा उस स्थिति का कारण और उसको सुधारने के उपायों पर भी विचार करता है।
- मूल्यांकन से निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा का ज्ञान होता है।
- मूल्यांकन एक विस्तृत अवधारणा है, जो छात्रों की क्षमता का पूर्ण ज्ञान करवाता है।

आकलन

- आकलन शिक्षण का एक विभिन्न अंग है।
- आकलन सीखने की एक प्रक्रिया है। इसके अन्तर्गत शिक्षक को शिक्षण कार्यों में समझने में सहायता प्रदान करता है।
- **एर्विन** के अनुसार, ''आकलन विद्यार्थियों के अधिगम तथा विकास के सम्बन्ध में निष्कर्ष लेने के लिए व्यवस्थित आधार है। यह सूचनाओं को परिभाषित करने, चयन करने, संग्रह करने, विश्लेषण करने, विद्यार्थियों के अधिगम तथा विकास के संवर्धन के लिए सूचनाओं का उपयोग करने की प्रक्रिया है।''
- **ह्यायुबा** एवं **फ्रीड** के अनुसार, ''आकलन सूचना-ग्रहण तथा उस पर विचार-विमर्श प्रक्रिया है, जिन्हें हम विभिन्न माध्यमों से प्राप्त कर ये समझा सकते हैं कि विद्यार्थी क्या जानता है, समझता है, अपने शैक्षिक अनुभवों से प्राप्त ज्ञान को परिणाम के रूप में व्यक्त कर सकता है जिसके द्वारा छात्र के अधिगम में वृद्धि होती है।''
- **इरविन** के अनुसार, ''विद्यार्थियों के विकास व सीखने के सम्बन्ध में राय को निर्धारित करने का आधार ही आकलन है। यह सूचनाओं के परिभाषीकरण, चयन, संकलन, विश्लेषण, विवेचन व प्रयोग की प्रक्रिया है जिससे कि विद्यार्थियों के सीखने एवं विकास प्रक्रिया में वृद्धि हो सके।''

आकलन के प्रकार

1. **स्व/स्वयं आकलन**—आकलन के इस प्रकार में छात्र स्वयं कक्षा अध्यापन के माध्यम से स्वयं के कार्यों का मूल्यांकन करते हैं।
2. **सहपाठी आकलन**—इसके अन्तर्गत दो या दो से अधिक बालक आपस में एक-दूसरे की कमियों या अच्छाइयों को बताते हैं।
3. **व्यक्तिगत आकलन**—इस आकलन में शिक्षक के सामने एक ही बालक होता है, उसी का आकलन किया जाता है।
4. **समूह आकलन**—इसके तहत शिक्षक कुछ बालकों का एक समूह बनाकर उन्हें सामूहिक-साझी जिम्मेदारी देता है। इसका उद्देश्य बालक के सामाजिक सहकारी गुणों का आकलन करना होता है। यह बालक के सहशैक्षिक पक्ष का आकलन होता है।

आकलन का महत्व

- आकलन स्व-मूल्यांकन में सहायक होता है।
- आकलन के माध्यम से शिक्षा के उद्देश्य प्राप्त होते हैं।
- आकल के आधार पर शिक्षक छात्रों को उपचारात्मक शिक्षण देता है।
- आकलन से छात्रों के अधिगम स्तर में बढ़ोत्तरी होती है।
- यह पृष्ठपोण प्रदान करने में लाभप्रद है।
- आकलन के माध्यम से अधिगम की कमियाँ एवं अच्छाईयों का ज्ञान प्राप्त होता है।
- यह छात्र की प्रगति जानने में सहायक होता है।
- आकलन शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक है।

आकलन के प्रतिमान

1. अधिगम के लिए आकलन
2. अधिगम के रूप में आकलन
3. अधिगम में आकलन
4. अधिगम का आकलन

मूल्यांकन

- **'मूल्यांकन'** अंग्रेजी शब्द **'इवैलुएशन' (Evaluation)** का हिन्दी रूपान्तरण है। इवैलुएशन का अर्थ है—**किसी तथ्य के सम्बन्ध में निर्णय लेना** या **निष्कर्ष निकालना।**
- हिन्दी का **'मूल्यांकन'** शब्द **मूल्य + अंकन** से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—**मूल्य आंकना।**

17 क्रियात्मक अनुसंधान [Action Research]

- क्रियात्मक अनुसंधान की उत्पत्ति का स्रोत **'आधुनिक मानव व्यवस्था सिद्धान्त'** है। यह व्यवस्था सिद्धान्त कार्य तथा सम्बन्ध केन्द्रित होती है।
- इस व्यवस्था के कार्यकर्ता में कार्य कुशलता के साथ-साथ समस्या के समाधान की क्षमता भी होती है।
- कार्यकर्ता को कार्य-प्रणाली की समस्या के चयन करने तथा उसके समाधान ढूँढ़ने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए, ताकि वह अपनी कार्य कुशलता का सही तरीके से विकास कर सकें।
- क्रियात्मक अनुसंधान प्रजातंत्र युग की देन है। यह सम्प्रत्यय सामाजिक-मनोविज्ञान की देन है।
- सर्वप्रथम **बकिंघम** ने 1926 में अपनी पुस्तक **'रिसर्च फॉर टीचर्स'** में क्रियात्मक अनुसंधान का उल्लेख कर शिक्षा के क्षेत्र में इसके विकास को प्रशस्त किया।
- **अमेरिका** क्रियात्मक अनुसंधान का प्रतिपादक देश है।
- **स्टीफन एम. कोरे** ने क्रियात्मक अनुसंधान का शिक्षा की समस्याओं के लिए सर्वप्रथम प्रयोग किया।
- क्रियात्मक अनुसंधान विद्यालयों की कार्य प्रणाली में सुधार और परिवर्तन लाने का उत्तम तरीका है।
- क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया सदैव समस्या पर केन्द्रित होती है।
- क्रियात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य कक्षा व विद्यालय प्रणाली से सम्बन्धित समस्या का कारण जानकर समाधान करना है।
- **राइट स्टोन** ने क्रियात्मक अनुसंधान शब्द को गति प्रदान की।
- **कुर्ट लेविन** ने 1946 ई. में सामाजिक सम्बन्धों की दिशा में सुधार करने हेतु क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणाली पर जोर दिया।
- क्रियात्मक अनुसंधान कार्य में अनुसंधान है। यह विद्यालय अनुसंधान का रूप है जिसमें विद्यालय के शिक्षक अनुसंधान के वैज्ञानिक सोपानों का प्रयोग करते हुए अपनी समस्याओं का समाधान करते हैं।
- 'क्रियात्मक अनुसंधान' को कोलाम्बिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर **स्टीफन एम.कोरे** ने 1953 ई. में शिक्षा जगत में स्थायी रूप से प्रतिष्ठित किया था।
- **कामता प्रसाद पाण्डे** ने 1965 ई. में 'शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान' नामक पुस्तक लिखी।
- क्रियात्मक अनुसंधान का उद्देश्य कर्मियों के द्वारा अपनी समस्याओं का स्वयं अध्ययन करके उनका समाधान प्रस्तुत करना, प्राप्त परिणामों का क्रियान्वयन करना एवं अन्य सहयोगियों को इस सम्बन्ध में संसूचित करना है।

क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ व परिभाषा

- क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ **विद्यालय से सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा अपनी और विद्यालय की समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन करके अपनी क्रियाओं और विद्यालय की गतिविधियों में सुधार करना है।**
- निरीक्षक अपने प्रशासन में, प्रबन्धक अपने विद्यालयों की व्यवस्था में, प्रधानाचार्य अपने विद्यालय के संचालन में और शिक्षक अपने शिक्षण में सुधार करने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग करते हैं।
- क्रियात्मक अनुसंधान के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

1. **एस.एम. कोरे** के अनुसार, ''शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रयोगकर्त्ता अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन कर अपने कार्यों में सुधार करता है।''
2. **कार्टर वी. गुड** के अनुसार, ''क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों, निरीक्षकों और प्रशासकों द्वारा अपने निर्णयों और कार्यों की गुणात्मक उन्नति के लिए प्रयोग किया जाने वाला अनुसंधान है।''
3. **रिसर्च इन एजुकेशन** के अनुसार, ''क्रियात्मक अनुसंधान वह अनुसंधान है, जो एक व्यक्ति अपने उद्देश्यों को अधिक उत्तम प्रकार से प्राप्त करने के लिये करता है।''
4. **मौली के अनुसार** के अनुसार, ''शिक्षक के सामने उपस्थित होने वाली समस्याओं में से अनेक तत्काल ही समाधान चाहती हैं। तत्काल किये जाने वाले अनुसंधान, जिनका उद्देश्य तात्कालिक समस्या का समाधान होता है, उसे क्रियात्मक अनुसंधान कहा जाता है।''

क्रियात्मक अनुसंधान व मौलिक अनुसंधान में अन्तर

- मौलिक अनुसंधान का विकास मानव की वैज्ञानिक चेतना के साथ-साथ हुआ है। इसी अनुसंधान की एक नवीनतम शाखा क्रियात्मक अनुसंधान है।
- इन दोनों के मूलभूत अन्तर को **बेस्ट** ने स्पष्ट करते हुए लिखा है— **''मौलिक अनुसंधान वैज्ञानिक विधि से विश्लेषण और सामान्यीकरण करने की औपचारिक और व्यवस्थित प्रक्रिया है। क्रियात्मक अनुसंधान ने मौलिक अनुसंधान के वास्तविक अभिप्राय को अपनाते हुए सिद्धान्तों के प्रतिपादन के बजाए समस्याओं के समाधान पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है।''**

खण्ड - VI

19 राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 [National Education Policy-2020]

परिचय

- शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास ओर राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौतिक पहुँच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है।
- स्वतंत्रता के बाद भारत में तीन राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ लागू की गयी हैं।
  1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1968 (इंदिरा गाँधी के समय)
  2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 (राजीव गाँधी के समय) इसमें नरसिम्हा राव सरकार ने 1992 में कुछ संशोधन किये थे।
  3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 (नरेन्द्र मोदी के समय)
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, 21वीं शताब्दी की प्रथम शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- भारत सरकार द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत् विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 (एसडीजी 4) में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में 2030 तक ''सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यन्त शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिये जाने'' का लक्ष्य है।
- इस समिति ने मई 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा प्रस्तुत किया था।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मसौदा पूर्व इसरो प्रमुख पद्मभूषण प्राप्त डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा तैयार किया गया।
- 29 जुलाई 2020 को केन्द्रीय केबिनेट ने इसे मंजूरी प्रदान की।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार स्तम्भ

1. सब तक पहुँच (Access)
2. भागीदारी (Equity)
3. गुणवत्ता (Quality)
4. किफायती (Affordability)
5. जवाबदेही (Accountability)

- केबिनेट द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदल कर ''शिक्षा मंत्रालय'' करने को मंजूरी दी गई है।
- NEP 2020 के तहत MHRD का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय करने का उद्देश्य ''शिक्षा और सीखने की ओर पुनः ध्यान आकर्षित करना है।''
- भारत द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 (एसडीजी) 4 में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में 2030 तक ''**सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा** सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यन्त शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने'' का लक्ष्य है। इस तरह के उदात्त लक्ष्य के लिए संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को समर्थन और अधिगम को बढ़ावा देने के लिए पुनर्गठित करने की आवश्यकता होगी, ताकि सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के सभी महत्वपूर्ण टार्गेट और लक्ष्य (एसडीजी) प्राप्त किए जा सकें।
- नई शिक्षा नीति 2020 के **चार भाग** तथा **27 अध्याय** है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भाग व अध्याय

भाग	अध्याय
1. स्कूल शिक्षा (अध्याय 1 से 8)	1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षाः सीखने की नींव
	2. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञानः सीखने के लिए एक तात्कालिक आवश्यकता और पूर्वशर्त
	3. ड्रॉपआउट बच्चों की संख्या कम करना और सभी स्तरों पर शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करना
	4. स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षण-शास्त्रः अधिगम समग्र, एकीकृत, आनंददायी और रुचिकर होना चाहिए
	5. शिक्षक
	6. समतामूलक और समावेशी शिक्षाः सभी के लिए अधिगम
	7. स्कूल कॉम्प्लेक्स/क्लस्टर के माध्यम से कुशल संसाधन और प्रभावी गवर्नेंस
	8. स्कूली शिक्षा के लिए मानक निर्धारण और प्रत्यायन
2. उच्चतर शिक्षा (अध्याय 9 से 19)	9. गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयः भारतीय उच्चतर शिक्षा व्यवस्था हेतु एक नया और भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण
	10. संस्थागत पुनर्गठन और समेकन
	11. समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर
	12. सीखने के लिए अनुकूलतम वातावरण व छात्रों को सहयोग

खण्ड - VII

20 राजस्थान की समसामयिक बाल कल्याणकारी शैक्षिक योजनाएँ [Contemporary Child Welfare Educational Schemes of Rajasthan]

मुख्यमंत्री हुनर विकास योजना

- पालनहार योजना के अन्तर्गत लाभान्वित बच्चों को स्वावलम्बी बनाने हेतु व्यावसायिक, तकनीकी तथा उच्च शिक्षा की सुविधा, कौशल विकास प्रदान करने के लिये मुख्यमंत्री हुनर विकास योजना संचालित की जा रही है।
- पालनहार योजना के अन्तर्गत लाभान्वित बच्चें, जिनकी **आयु 15 वर्ष** पूर्ण हो चुकी है, योजना में पात्र होंगे।
- अधिकतम आयु 21 वर्ष अथवा संबंधित कोर्स/कार्यक्रम पूर्ण होने तक सीमित होगी।
- छात्र द्वारा जो फीस रसीद प्रस्तुत की जाती है उस राशि का पुनर्भरण किया जाता है।

अम्बेडकर पुरस्कार योजना

1. अम्बेडकर राज्य स्तरीय पुरस्कार योजना

- बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की **वर्ष 2005** में 114वीं जयन्ती समारोह में विभाग की ओर से प्रतिवर्ष 14 अप्रैल को अम्बेडकर जयन्ती को अम्बेडकर जयन्ती पर विभिन्न क्षेत्रों में अम्बेडकर पुरस्कार दिये जाने की घोषणा की गई थी।
- इसके अन्तर्गत अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST) वर्ग के छात्र-छात्राओं को जिन्होंने कक्षा **10 व 12वीं** की राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए हो को अम्बेडकर शिक्षा पुरस्कार स्वरुप **51-51 हजार रुपये** नकद दिये जाते है।
- भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 129वीं जयन्ती पुरस्कार योजना में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के 9 विद्यार्थियों को वर्ष 2020 में तथा 8 विद्यार्थियों को वर्ष 2021 में 51 हजार रुपये प्रत्येक को नकद व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये जाते है।

2. अम्बेडकर जिला स्तरीय पुरस्कार योजना

- वर्ष 2020-21 से जिला स्तरीय अम्बेडकर पुरस्कार योजना प्रारम्भ की गयी है, जिसकी पात्रता उपरोक्तानुसार जिला स्तरीय ही रहेगी। उक्त योजना में **कोई नकद राशि प्रदान नहीं की जाएगी।** केवल प्रशंसा पत्र जिला कलक्टर के माध्यम से प्रदान किया जायेगा।

3. अम्बेडकर डीबीटी जिला स्तरीय पुरस्कार योजना

- यह योजना वर्ष **2021-22** में प्रारंभ की गई इसमें जिला मुख्यालयों पर संचालित समस्त स्नातक एवं स्नातकोत्तर (केवल शैक्षणिक पाठ्यक्रमों कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय हेतु) राजकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अति पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक और आर्थिक पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी जो घर से दूर रहकर अन्य स्थान पर कमरा किराये पर लेकर (पेईंग गैस्ट के रूप में) अध्ययन करते है उन छात्रों हेतु आवास, भोजन एवं बिजली-पानी इत्यादि सुविधाओं हेतु पुनर्भरण राशि के रूप में अम्बेडकर डीबीटी वाउचर योजना के अन्तर्गत ₹2,000 प्रतिमाह (प्रतिवर्ष अधिकतम 10 माह हेतु) देय है। योजनान्तर्गत वर्ष 2023-24 में कुल 1,234 छात्रों को लाभान्वित किया जाकर कुल ₹192.38 लाख का व्यय किया गया है।

निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना

- निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना का प्रारम्भ **सत्र 2004-05** में हुआ।
- प्रारम्भ में केवल कक्षा 1-8 की छात्राओं हेतु प्रारम्भ की गयी थी।
- इस योजना के तहत राज्य सरकार राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल जयपुर में माध्यम से सभी सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को निम्नानुसार निःशुल्क पाठ्य पुस्तके उपलब्ध करवाती है
  1. कक्षा 1 से 8 में अध्ययनरत समस्त छात्र-छात्राऐं
  2. कक्षा 9 से 12 तक की समस्त छात्राऐं तथा अनुसूचित जाति (SC) एवं अनुसूचित जनजाति (ST) के विद्यार्थियों को
  3. कक्षा 9 से 12 के उन विद्यार्थियों को जिनके माता-पिता आयकर दाता नहीं है। **(अर्थात SC, ST वर्ग के विद्यार्थियों के अलावा अन्य वर्ग के आयकर दाता माता/पिता के लड़कों (Boys) को निःशुल्क पाठ्यपुस्तक नहीं मिलती)**
  4. राजकीय स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूलों में कक्षा 6 से 12 तक के अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों को।

बालिका शिक्षा फाउण्डेशन द्वारा संचालित योजनाओं का विवरण

1. गार्गी पुरस्कार योजना (निदेशालय मा. शि.से वित्त पोषित)	
योजना प्रारम्भ होने का वर्ष	1998
योजना की पात्रता	(i) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर से **75 प्रतिशत** अथवा इससे अधिक अंकों से कक्षा 10वीं माध्यमिक एवं प्रवेशिका उत्तीर्ण (ii) स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल की बालिकाओं को भी यह पुरस्कार देय है। कक्षा 10^{th} में 8 से 10 CGPA अंक प्राप्त करने पर (iii) समस्त वर्ग की बालिकाएँ

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

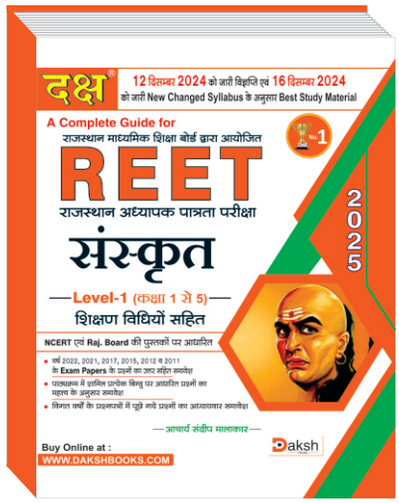

दक्ष प्रकाशन

(A Unit of College Book Centre)

A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)

फोन नं. 0141-2604302

Code No. D-802 | ₹ 400/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु

WWW.DAKSHBOOKS.COM

पर ORDER करें

★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★